

## कोरोना नियंत्रण को खट्टर सरकार का बड़ा कदम

**रोहतक।** हरियाणा सरकार ने 12 आईएसएफ अफसरों को उनके वर्तमान कार्यभार के अलावा जिलों में कोविड-19 रोकथाम संबंधी तैयारियों की समीक्षा और निगरानी करने के लिए तैनात किया है। एक सरकारी प्रवक्ता ने कहा कि संजीव कौशल को फरीदाबाद, अलोक निगरानी-पंचकूला, देवेन्द्र सिंह- कर्नाल, टी.सी. गुप्ता-गुरुग्राम, अमित झा-सोनीपत, एस.एन. राय-अंबाला, महावीर सिंह-झज्जर, अनुराग रस्तोगी-हिंसा, विनीत गार्ग-सिरसा, जी. अनुपमा-कुरुक्षेत्र, अपूर्व कुमार सिंह-पानीपत और राकेश गुप्ता को रोहतक जिले में तैनात किया गया है। ये सभी अफसर संबंधित जिलों में अपने दौरे के दौरान विभिन्न मुद्दों पर निगरानी रखेंगे। इनमें कोविड-19 महामारी के खिलाफ जिला प्रशासन की सक्रिय भागीदारी, कोविड-19 टेस्टिंग और विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी, धार्मिक और अन्य संगठनों के माध्यम से कोविड टीकाकरण में वृद्धि, जिलों में कोविड-19 से निपटने के लिए सरकारी और निजी अस्पतालों आदि में आइसोलेशन बेड, ऑक्सिजन स्पोर्ट बेड, आईसीयू बेड, वेंटिलेटर्स, दवाइयां, मास्क, पीपीई किट, सैनिटाइजर आदि की समीक्षा करना, जरूरत आधार पर अधिक निजी अस्पतालों को कोविड-19 इलाज के लिए जोड़ना, सक्रिय कोविड-19 पांजिटिव मामलों के कॉन्टेक्ट ट्रेसिंग बढ़ाना, जिला प्रशासन द्वारा माइक्रो कंटैन्मेंट जोन की उचित डिमांडेशन, होम आइसोलेशन में रह रहे कोविड-19 मरीजों के लिए व्यवस्थाओं की समीक्षा, सार्वजनिक स्थलों पर कोविड-19 एप्रोप्रिएट व्यवहार जैसे सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क पहनना, हाथों की सफाई आदि लागू करना और सामाजिक समारोहों विशेष तौर पर बैक्रेट हॉल में शादीयों और अन्य पारिवारिक समारोहों के दौरान सरकार द्वारा जारी आदेशों का सख्ती से काया-न्यूनन सुनिश्चित करना शामिल है। हरियाणा में कोरोना संक्रमण एक बार फिर तेजी से परे प्रसारने लगा है। शुक्रवार को राज्य में कोरोना संक्रमण के 6277 नए मामले सामने आए जिससे राज्य में इससे संक्रमितों की कुल संख्या 342077 हो गई है। इनमें से 304906 लोग ठीक हो चुके हैं। 20 कोरोना मरीजों के आज दम तोड़ देने से राज्य में इस महामारी से मरने वालों की कुल संख्या 3354 हो गई है।

## जरूरतमंदों के मददगार सोनू सूद को हुआ कोरोना

**मुंबई।** अभिनेता सोनू सूद कोरोना संक्रमित हो गए हैं। उन्होंने एक ट्वीट कर इसकी जानकारी दी है। उनके कोरोना संक्रमित होने के बाद प्रशासक उनके लिए दुआएं कर रहे हैं। सोनू सूद ने हाल ही में अमृतसर में कोविड 19 की पहली डोज ली थी। सोनू सूद ने सोशल मीडिया पर लिखा कि 'कोविड पांजिटिव, मुझे और स्पिरिट सुपर पांजिटिव। सभी को हाय। आज सुबह मेरा कोविड 19 टेस्ट पांजिटिव आया है। सुरक्षा के तमाम नियमों को देखते हुए मैंने पहले ही खुद को क्वारंटीन कर लिया है और ध्यान रख रहा हूँ लेकिन चिंता मत करिए। इसने मुझे अपनी समस्याओं को हल करने के लिए पर्याप्त समय दिया है। यदि रखिए मैं हमेशा आप के लिए हूँ। कोरोना के मामले जब कम हुए थे तब सोनू उन प्रवासी मजदूरों के काम के जुगाड़ में लग गए थे जो घर तो पहुंच गए लेकिन उनके पास काम नहीं था। पिछले एक साल से वो लगातार कोरोना की इस मुश्किल घड़ी में लोगों की मदद करते आ रहे हैं लेकिन अब जिस रफ्तार से संक्रमितों की संख्या में रिकॉर्डतोड़ बढ़ोतरी हो रही है उसके आगे वो भी बेबस नजर आए। सोनू सूद ने एक ट्वीट कर कहा कि उनके पास हजारों लोगों के कॉल आ रहे हैं लेकिन सभी की मदद नहीं कर पा रहे हैं। वो बहुत लाचार महसूस कर रहे हैं। एक ट्वीट में सोनू सूद लिखते हैं कि 'मैं निश्चित हूँ कि हम सब मिलकर अनेक लोगों की जिंदगियां बचा सकते हैं। यह समय किसी पर दोष मढ़ने का नहीं है बल्कि एक ऐसे जरूरतमंद के लिए आगे आने का वक़्त है जिसे आपकी जरूरत है। कोशिश करिए उन्हें चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएं पenuhi जा सकें। ज़लिय मिलकर जिंदगियां बचाते हैं। हमेशा आपके लिए उपस्थित।

## उतराखंड में मैदानी इलाकों में बारिश, पहाड़ों में बर्फबारी

**देहरादून।** उतराखंड में शनिवार को मौसम खराब हो गया। एक ओर देहरादून में जहां तेज हवाएं चलने लगीं तो वहीं दूसरी ओर पहाड़ी इलाकों में बारिश और बर्फबारी हुई। दोपहर बाद राजधानी देहरादून में बारिश हुई। जिसके बाद धूप निकल आई। शनिवार को राज्य में अधिकतर इलाकों में बादल छाए हुए हैं। चमोली और रुद्रप्रयाग जिले में भी मौसम खराब हो गया है। चमोली में ऊंचाई वाले इलाकों में बारिश और बर्फबारी हुई है। जबकि निचले क्षेत्रों में तेज हवा चल रही है। रुद्रप्रयाग में धूप छांव का खेल जारी है। नई टिहरी और आसपास के क्षेत्रों में तेज बारिश हुई। बागेश्वर में दस मिम्ट तक तेज बारिश हुई। बडकोट के साथ आसपास के क्षेत्रों में हवा के साथ बारिश हुई। वहीं इससे पहले शुक्रवार को राजधानी के कुछ इलाकों में आंधी के साथ बारिश हुई थी। जिससे गर्मी से कुछ राहत मिली। मसुरी शहर में अचानक मौसम का मिजाज बदलने से हल्की बारिश हुई, जिससे मौसम में हल्की ठंड लौट आई। बारिश के बाद तापमान में गिरावट दर्ज की गई। इससे मौसम खुशनुमा हो गया।

## गुजरात के हीरा उद्योग पर महामारी बेअसर

**सूरत।** कोरोना वायरस महामारी से सभ उद्योग प्रभावित हुए हैं। कोरोना संक्रमण के मामले और मौतों की संख्या में जारी वृद्धि के चलते खौफनाक माहौल बना हुआ है। कोविड-19 के मामले बढ़ने और लॉकडाउन लगने की आशंका में प्रवासी मजदूर बड़ी संख्या में अपने गांवों की तरफ जाने लगे हैं। लेकिन गुजरात के सूरत शहर के हीरा उद्योग का दावा है कि मौजूदा स्थिति का खयमंड इंडस्ट्री पर फिलहाल कोई असर नहीं हुआ है। सूरत डायमंड एंजॉयसियस के मुताबिक सूरत शहर में 3,000 के करीब छोटे और बड़े हीरा कारोबारियों द्वारा पांच लाख कर्मचारियों को काम पर रखा गया है। यहाँ जयादातर प्रवासी मजदूर सौराष्ट्र और उत्तरी गुजरात के हैं जबकि केवल 10 फीसदी कामगार ही उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और बिहार से आते हैं। दुनियाभर में मशहूर सूरत की डायमंड इंडस्ट्री का सालाना कारोबार करीब 1.45 लाख करोड़ रुपए का है। सूरत डायमंड एंजॉयसियस के अध्यक्ष नानू वेकारिया ने यह जानकारी देते हुए कहा कि इन पांच लाख कर्मचारियों में से केवल पांच फीसदी ही हाल में अपने गांवों को गए हैं। इन्होंने गुजरात और गुजरात से बाहर दोनों जगह के कामगार हो सकते हैं। वेकारिया ने कहा कि, कुछ प्रवासी मजदूर तो शादी-ब्याह और दूसरे सामाजिक कार्यों में शामिल होने के लिए गए हैं जबकि कुछ लोग लॉकडाउन के डर से भी शहर छोड़कर गए हैं। वहीं कुछ अपने बीमार माता-पिता और संबंधियों की खोज खबर लेने भी गए हैं।

## UP में 10 नए ऑक्सिजन प्लांट स्थापित करने का CM योगी ने दिया निर्देश, 6 करोड़ से अधिक आएगी लागत

### लखनऊ:

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश में कोरोना मरीजों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े इसके लिए एक मजबूत रणनीति तैयार की है। प्रदेश में कोरोना से निपटने के लिए तेजी से सुविधाओं का विस्तार करते हुए सीएम योगी ने कोविड-19 प्रबंधन के लिए गठित टीम-11 को दिशा-निर्देश देते हुए प्रदेश में ऑक्सिजन की किल्लत न हो इसके लिए 10 नए अलग-अलग स्थानों पर जल्द ही 10 नए ऑक्सिजन प्लांट स्थापित करने के निर्देश दिए हैं। प्रदेश में शनिवार को ही आला अधिकारियों को 10

नवीन ऑक्सिजन प्लांट की स्थापना के लिए स्थान को चिन्हित कर युद्धस्तर पर कार्यवाही शुरू करने के आदेश सीएम ने दिए हैं।

6 करोड़ से अधिक आएगी लागत इसके साथ ही सीएम ने स्वास्थ्य मंत्री और अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य को इस पूरी प्रक्रिया पर पैनी नजर बनाए रखने के आदेश भी दिए हैं। प्रत्येक ऑक्सिजन प्लांट को बनाने में 63 लाख रुपए व्यय किए जाएंगे। इस प्रकार प्रदेश में तैयार किए जाने वाले इन दसों ऑक्सिजन प्लांट को बनाने में छह करोड़ से अधिक धनराशि को व्यय किया जाएगा।

**सुनिश्चित करें ऑक्सिजन और**

### रेमिडीसीवीर की पर्याप्त उपलब्धता

बता दें कि प्रदेश के प्रत्येक जनपद में चिकित्सा कर्मियों, कोविड बेड, दवाओं, मेडिकल उपकरणों और ऑक्सिजन की पर्याप्त उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए सीएम ने इन सभी पर कड़ी निगरानी रखने के आदेश दिए हैं। सीएम ने खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग को ऑक्सिजन और रेमिडीसीवीर की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कहा है। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा मेडिकल ऑक्सिजन की सुचारू अपूर्ति के संबंध में स्थापित कंट्रोल रूम 24x7 सक्रिय रहे। ऑक्सिजन उपलब्धता की दैनिक समीक्षा करने के निर्देश भी

सीएम ने दिए हैं।

### 36 घंटों पहले ही अनुमानित ऑक्सिजन की उपलब्धता को किया जाएगा सुनिश्चित

प्रदेश के सभी अस्पतालों में अगले 36 घंटों के लिए पूर्णतः अनुमानित ऑक्सिजन का आंकलन कर उसकी उपलब्धता को सुनिश्चित करने के निर्देश सीएम ने दिए हैं। प्रदेश में रेमिडीसीवीर समेत दूसरी जरूरत की दवाओं की कोई कमी नहीं है। सभी जिलों में इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करने के आदेश सीएम ने दिए हैं।

**निजी मेडिकल कॉलेजों को अब बिना झंझट मिलेगा सिलेंडर**  
प्रदेश के निजी मेडिकल कॉलेजों में

जहां ऑक्सिजन सिलेंडरों की कमी के कारण आईसीयू बेड उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं, ऐसे संस्थानों को राज्य सरकार आबे सीजन सिलेंडर उपलब्ध कराएगा। सीएम ने डीजी मेडिकल एजुकेशन इस व्यवस्था को सुनिश्चित करेंगे।

### अवध शिल्प ग्राम में तैयार होगा नया कोविड अस्पताल

राजधानी लखनऊ के अवध शिल्प ग्राम में एचएएल के सहयोग से एक नया सभी सुविधाओं से लैस एक कोविड हॉस्पिटल तैयार किया जाएगा। सीएम ने स्वास्थ्य विभाग को एचएएल से समन्वय स्थापित कर इस महत्वपूर्ण कार्य को तत्काल क्रियशील करने के आदेश दिए हैं।

## लॉकडाउन की ओर बढ़ रहे बिहार के कदम

### पटना।

बिहार में कोरोना की भयावह हो रही स्थिति को देखते एक नीतीश कुमार सरकार संक्रमण को रोकने के लिए एक-एक कदम आगे बढ़ रही है। बिहार सरकार के इन कदमों से लोगों को एक बार फिर से लॉकडाउन का डर सताने लगा है। सरकार ने जिम, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स और पुरातत्व और पर्यटन स्थल को 15 मई तक बंद रखने की घोषणा की है। इससे पहले सरकार ने इसी हफ्ते स्कूल-कॉलेज समेत तमाम निजी और सरकारी शैक्षणिक संस्थानों को बंद करने और बाजारों में दुकानों और व्यापारिक संस्थानों को 7 बजे तक बंद कर देने के आदेश जारी किए हैं। कला संस्कृति विभाग ने इसको लेकर 3 अलग-अलग आदेश जारी किए हैं। बिहार कला संस्कृति विभाग ने कोरोना के संक्रमण को रोकने एवं उससे बचाव के लिए लॉकडाउन में सावधानी के तौर पर राज्य सरकार द्वारा सुरक्षित घोषित सभी स्मारक, पुरास्थल आमदर्शकों, आगंतुकों के परिभ्रमण के लिए बंद रखने का निर्णय लिया गया है। कला संस्कृति विभाग के छत्र एवं युवा कल्याण निदेशक डॉ. संजय सिन्हा द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू रहेगा। डॉ. सिन्हा ने विभागीय सचिव से अनुमोदन प्राप्त अपने दूसरे आदेश में कहा कि सभी संग्रहालय (यूजियम) तत्काल प्रभाव से आम दर्शकों व आगंतुकों के लिए बंद रखने का निर्णय लिया गया है। छत्र एवं युवा कल्याण निदेशक द्वारा जारी एक और आदेश में शुक्रवार से तत्काल प्रभाव से राज्य में खेल गतिविधियों पर रोक लगा दी गयी है। आदेश में कहा गया है कि कोरोना वायरस का प्रसार रोकने और संक्रमण की कड़ी को तोड़ने के लिए 15 मई तक राज्य स्थित सभी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, आउटडोर एवं इंडोर स्टेडियम, तरंगताल, खेल मैदानों में खेलों के आयोजन, कार्यक्रमों तथा प्रशिक्षण एवं सभी जिमों के संचालन पर रोक लगाई जाती है।

## सीडब्ल्यूसी की बैठक में सोनिया की केंद्र से गुहार

### नई दिल्ली।

देश में जारी कोरोना कहर के बीच कांग्रेस की वरिष्ठ कमेटी की एक अहम बैठक हुई। कांग्रेस की शीर्ष नीति निर्धारक इकाई कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्ल्यूसी) ने कोरोना वायरस संक्रमण के मामलों में तेजी से वृद्धि के बीच मौजूदा हालात पर चर्चा की। इस बैठक में पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा से यह माना है कि कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई एक राष्ट्रीय चुनौती है, जिसे पार्टी की राजनीति से दूर रखा जाना चाहिए। उन्होंने युवाओं को भी वैकसीन देने की वकालत करते हुए कहा कि कोविड-19 का टीका 25 साल तक के लोगों को लगाया जाए।

कांग्रेस वरिष्ठ कमेटी की बैठक में सोनिया गांधी ने कहा, %कोविड-19 की दूसरी लहर ने देश को बुरी तरह प्रभावित किया है, हमारे पास इससे निपटने की तैयारी के लिए एक साल का समय था, लेकिन हम को बिना तैयारी के फिर इसकी चपेट में आ गए हैं। उन्होंने कहा कि कोविड-19 संकट संबंधी पूर्वानुमान, आकलन और प्रबंधन के संदर्भ में मोदी सरकार ने कोई तैयारी नहीं की। सरकार को टीकाकरण के लिए अपनी प्राथमिकता पर पुनर्विचार करना चाहिए और आयुसीमा को घटाकर 25 साल करना चाहिए। अर्थशा, मधुमेह, किडनी और लीवर संबंधी बीमारियों से पीड़ित सभी युवाओं को टीका लगाया जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि टीकाकरण

के लिए अभी न्यूनतम आयुसीमा 45 साल निर्धारित है। उन्होंने कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक में कहा कि सरकार को कोरोना से निपटने के लिए जरूरी चिकित्सा उपकरणों और दवाओं को जीएसटी से मुक्त करना चाहिए तथा कोरोना वायरस संक्रमण के प्रसार पर अंकुश लगाने के लिए सख्त कदम उठाने पर गरीबों को प्रति माह छह हजार रुपये की मदद देनी चाहिए।

सोनिया ने कहा कि इस संकट की घड़ी में अपना कर्तव्य निभा रहे स्वास्थ्यकर्मियों एवं दूसरे कर्मचारियों को कांग्रेस सत्ताम करती है। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी की अगुवाई में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से चल रही बैठक में पार्टी के पूर्व अध्यक्ष



राहुल गांधी और सीडब्ल्यूसी के दूसरे सदस्य शामिल हुए। इस बैठक में कोरोना महामारी और इस स्थिति से निपटने के लिए उठाए जाने वाले जरूरी कदमों को लेकर चर्चा की गई। इसमें सरकार से जरूरी कदम उठाने की मांग को लेकर प्रस्ताव भी पारित किया जा सकता है।

## चारा घोटाला केस: लालू यादव को मिली जमानत

### रांची।

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद को बड़ी राहत मिली है। चारा घोटाले के दुमका कोषागार से अवैध निकासी के मामले में झारखंड हाईकोर्ट ने शनिवार को उन्हें शर्तों के साथ जमानत दे दी। करीब 40 माह बाद लालू प्रसाद जेल से बाहर आएंगे। फिलहाल लालू अस्वस्थ हैं और दिल्ली के एम्स में उनका इलाज चल रहा है। लालू प्रसाद के खिलाफ झारखंड में पांच मामलों में चर्चा चल रही है। चार मामलों में उन्हें जमानत मिल गयी है। पांचवा मामला डोरंडा कोषागार से अवैध निकासी से संबंधित है। सीबीआई कोर्ट में इस मामले की सुनवाई अभी चल रही है। जस्टिस अपरेश कुमार सिंह की अदालत ने लालू प्रसाद को एक लाख के निजी मुचलके, दस लाख जूमाना जमा करने का निर्देश दिया है। लालू प्रसाद को अपना पासपोर्ट जमा करना होगा। बिना कोर्ट की अनुमति के वे विदेश नहीं जा सकते। उन्हें अपना मोबाइल नंबर और पता भी नहीं बदलने का निर्देश अदालत ने दिया है। लालू प्रसाद ने अपने स्वास्थ्य और दुमका कोषागार केस में मिली आधी सजा काट लेने के आधार पर जमानत मांगी थी। लालू की ओर से पक्ष रखते हुए वरिय अधिवक्ता

कपिल सिन्घल ने अदालत को बताया कि सीबीआई कोर्ट ने उन्हें सात साल की सजा सुनायी है। प्रसाद ने छह अप्रैल को ही 42 माह जेल में काट लिए हैं। उनकी आधी सजा पूरी हो गयी है। इस कारण उन्हें जमानत प्रदान की जानी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने भी आधी सजा पूरी करने के बाद जमानत प्रदान करने का कई मामलों में आदेश दिया है। सीबीआई कोर्ट और सीएल कोर्ट में आदेश दिए हैं। लालू प्रसाद को जमानत का विरोध किया गया। सीबीआई का कहना था कि दुमका कोषागार में लालू प्रसाद को सीबीआई कोर्ट ने आर्डरपेसी में सात और पीसीएक्ट के तहत सात साल की सजा सुनायी है। सीबीआई कोर्ट ने दोनों सजा अलग-अलग चलाने का आदेश दिया है। ऐसे में लालू प्रसाद को दुमका कोषागार से अवैध निकासी में कुल 14 साल की सजा मिलती है। सात साल के जेल में बिचाने के बाद ही उनकी आधी सजा पूरी होगी। इस तरह उनकी आधी सजा पूरी नहीं हुई है। इसलिए वह जमानत के हकदार नहीं है। सीबीआई कोर्ट इस दलील का कपिल सिन्घल ने विरोध किया। उन्होंने अदालत को बताया कि इस मामले में कई और अन्य आरोपियों को सात साल की सजा मान कर ही जमानत प्रदान की गयी है।

## केजरीवाल सरकार का बड़ा कदम आईएसए और दानिक्स अफसरों को सौंपी कमान



### नई दिल्ली।

अरविंद केजरीवाल की अगुवाई वाली आम आदमी पार्टी (आप) सरकार ने दिल्ली में कोरोना के विराड़ते हालातों को संभालने के लिए नाइट कर्फ्यू और वीकेड कर्फ्यू के बाद शनिवार को एक और बड़ा कदम उठाया है। दिल्ली सरकार ने कोविड-19 प्रबंधन के

लिए 10 आईएसए अफसरों के बाद अब 15 दानिक्स (दिल्ली, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दादरा और नगर हवेली, और दमन और दीव सिविल सेवा) अफसरों को भी राजधानी के 15 बड़े निजी अस्पतालों में नाइटल अधिकारी के रूप में तैनात कर दिया है। साथ ही दिल्ली सरकार द्वारा कोरोना मरीजों के प्रबंधन के

निगरानी के लिए विभिन्न निजी अस्पतालों में नाइट अधिकारी के रूप में तैनात सभी वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारियों को इन अस्पतालों में कोविड-19 टीकाकरण की निगरानी का काम भी सौंपा गया है। दिल्ली सरकार ने उसके द्वारा संचालित कोविड-19 अस्पतालों के लिए शुक्रवार को 10 आईएसए अधिकारियों को नाइट अधिकारी नियुक्त किया और सभी से तय अस्पतालों से काम करने को कहा है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार, अधिकारी उन्हें सौंपे गए कोविड-19 अस्पताल के प्रभारी होंगे। सामान्य निगरानी, निर्देश देने के साथ साथ अस्पताल के कामकाज

पर उनका नियंत्रण होगा।

दिल्ली में कोविड-19 प्रबंधन के लिए नाइटल मंत्री बनाए गए उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि इस कदम से मरीज प्रबंधन बेहतर होगा और फैसले जल्दी लिए जा सकेंगे। उन्होंने ट्वीट किया, प्रत्येक अधिकारी अपने अपने तय अस्पताल में रहेंगे और लोगों की शिकायतें दूर करने की मजबूत व्यवस्था भी सुनिश्चित करेंगे। अस्पताल में प्रमुख जगहों पर नाइटल अधिकारी का नाम और फोन नंबर प्रदर्शित किया जाएगा। भारतीय प्रशासनिक सेवा के ये अधिकारी अपने पुराने कार्यालय के कर्मचारियों की भी मदद ले सकेंगे।

## डीजीपी अपर मुख्य सचिव सूचना और लखनऊ के डीएम कोविड पांजिटिव

### लखनऊ।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बढ़ते कोरोना केस के बीच यूपी डीजीपी एससी अक्वथी, अपर मुख्य सचिव सूचना नवीन सहलग और डीएम अभिषेक प्रकाश कोविड पांजिटिव हो गए हैं। तीनों अफसरों ने खुद को होम आइसोलेट किया है। खनन निदेशक रोशन जैकब लखनऊ की कार्यवाहक डीएम बनाई गई। एसएसपी बरें ली रोहित सिंह सजवान भी कोरोना पांजिटिव हो

गए हैं। एसएसपी ऑफिस अगले 48 घंटों के लिए बंद कर दिया है। एसपी देहात राजकुमार अग्रवाल पहले पांजिटिव हैं और एसपी ट्रैफिक की भी तबीयत खराब चल रही है। इससे पहले प्रमुख सचिव एसपी गोयल, सचिव अमित सिंह, ओएसडी अभिषेक कौशिक भी कोरोना की चपेट में आ चुके हैं। दो स्टॉफ भी कोरोना की चपेट में आए थे। साथ ही यूपी सरकार में मंत्री आशुतोष टंडन भी कोरोना पांजिटिव पाए गए थे। यूपी में पिछले 24 घंटों के अंदर कोरोना के

27,426 नए केस सामने आए हैं। वहीं राजधानी लखनऊ में वायरस के 6598 नए केस पता चले हैं। लखनऊ में पिछले 24 घंटों के दौरान 35 कोरोना मरीजों की मौत बात सामने आई है। राजधानी लखनऊ में कोरोना सारे रिकॉर्ड तोड़ दिया है। यहां एक दिन में कोरोना केस का अब तक का सबसे बड़ा आंकड़ा सामने आया है। संक्रमण के प्रसार के खतरे को देखते हुए एक बार फिर जांच का दायरा बढ़ाने की कवायद तेज कर दी गई। स्वास्थ्य विभाग ने जांच का



# एलर्जी वाले परफ्यूम से बचें

**आ**मतौर पर परफ्यूम सिंथेटिक होते हैं और कैमिकल्स से बने होते हैं। ये कैमिकल्स स्किन के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इन से एलर्जी भी हो जाती है जैसे बाने, ड्राइनेस, जलन यहां तक कि पिगमेंटेशन भी हो जाती है। संवेदनशील स्किन के लिए तो ये बहुत हानिकारक साबित होते हैं। अगर स्किन में किसी तरह का रिपेयरेशन हो जाए तो प्रभावित स्थान को ठंडे पानी से धोएं। फिर अच्छा मॉयश्चराइजर लगाएं। उस जगह को खुजलाएं नहीं करना सूजन हो सकती है। ऐसे नैचुरल परफ्यूम का इस्तेमाल करें जिस में कैमिकल्स न हों।

**साइटस-** संतरे या नीबू की खुशबू वाला परफ्यूम पूरे दिन मूड को ठीक रखता है। इसे दिन में लगाएं, पूरे दिन एक्टिव और फ्रेश महसूस करेंगी।

**वूडी-** ये परफ्यूम गरम होते हैं। इन्हें लगाने के बाद सैक्स संबंधित तंतिकाएं उत्तेजित हो जाती हैं। इन्हें अंतरंग पलों में लगाने से रिश्ते में प्रगाढ़ता आती है। इससे शाम या रात के समय ही लगाएं।

**फ्लोरल-** इसे डेली, कारनेशन, गार्डेनिया, जैस्मिन, ऑरेंज ब्लौसम आदि फ्लोरल खुशबूओं से तैयार किया जाता है। कई बार इन सारी खुशबूओं को एकसाथ भी मिला कर बनाया जाता है इसका प्रयोग गर्मी में करना बेहतर रहता है। फूलों की खुशबू वाले परफ्यूम रिलैक्सेशन तो देते ही हैं, सैक्स अपील भी बढ़ाते हैं।

**स्प्राइसी-** इसकी खुशबू बहुत तेज होती है। अगर किसी काम में मन न लग रहा हो तो इसे लगाने से निश्चय ही काम का जुनून पैदा हो जाएगा।



## दुल्हन श्रंगार

सभी चाहते हैं कि उनके विवाह में सबका ध्यान उनकी तरफ हो पर खूबसूरत दिखने के लिये केवल मेकअप ही काफी नहीं है। विवाह के कुछ दिन पहले से करें अपनी सही देखभाल और पायें सबकी आँखों में अपने लिये तारीफ की चमका।

त्वचा की देखभाल

**साफ सफाई:** रोज रात को सोते वक्त और सुबह किसी अच्छे क्लींजर से चेहरे की सफाई करें।

**फेसमास्क:** फेसमास्क हफ्ते में दो बार लगायें। यह चेहरे को ताजगी व त्वचा को कसावट देगा। त्वचा के अनुरूप फेसमास्क लगायें बेहतर होगा हर्बल फेसमास्क का उपयोग करें।

**मॉइश्चराइजर:** यह आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल खींच लेता है और यदि क्लींजर का इस्तेमाल करने के बाद भी त्वचा पर गंदगी रह गई, तो उसे भी साफ कर देता है। साथ ही इसके इस्तेमाल से त्वचा के पोर भी सिकुड़ जाते हैं, जिससे ज्यादा इकट्ठी नहीं हो पाती।

**सनटैन:** विवाह संबंधी कार्यों के सिलसिले में अक्सर बाहर जाना होता है। सूर्य की तेज किरणें आपकी त्वचा को कांतिहीन बना देती हैं। धूप में निकलने से पहले अपनी त्वचा के प्रकार के मुताबिक सनस्क्रीन लगायें।

**वैक्सिंग:** विवाह के छः हफ्ते पहले वैक्सिंग करवा लें। छह हफ्तों में बाल पुनःपूरी तरह विकसित हो जाते हैं। अब शादी के ठीक पहले वैक्सिंग करवाने से त्वचा साफ-सुंदर-कोमल दिखेगी।

बालों की देखभाल

**हेयर स्ट्राइल:** शादी पर हेयर स्ट्राइल कैसी रहेगी, ये पहले से तय करें। यदि छोटे बालों वाली स्ट्राइल सूट करती हो तो छह हफ्ते पहले बाल ट्रिम करवा लें। बाद में कोई दूसरी हेयर स्ट्राइल बिलकुल न करवायें जो पहले कभी न करवाई हो। स्ट्राइल जितनी सहज हो, उतना ही अच्छा।

**हेयर-ड्रायर:** कुछ हफ्ते पहले से हेयर ड्रायर और वॉल्यूमनाइजर का इस्तेमाल बंद कर दें। शादी और उसके बाद के अवसरों पर यूं भी इनका काफी इस्तेमाल करना पड़ता है।

**तेल-अच्छी शैम्पू:** शैम्पू से पहले गर्म तेल को बालों में अच्छी तरह मालिश करें। बालों में अच्छी तरह मालिश करें। बालों में कंडीशनर भी शादी तक न लगायें।

# शादी का बंधन है जरूरी

**प**च्चीस वर्षीय रागिनी के घर में पिछले 2-3 हफ्तों से शादी का हल्ला-गुल्ला चल रहा था। न...न... ये हल्ला-गुल्ला शादी के रसमों-रिवाज, मेहमानों की चिल्ल-पी और खुशियों की धमाचौकड़ी से नहीं उपजा है। असल में तो पिछले दिनों रागिनी के माता-पिता उसकी शादी के लिए एक रिश्ते लाने की गुस्ताखी कर बैठे। गुस्ताखी इसलिए क्योंकि रागिनी को शादी के बंधन में बंधने से इंकार है। उसे लगता है कि इसकी कोई जख्त नहीं। क्या आप भी ऐसा ही कुछ सोचते हैं?

रागिनी ने इस पर न सिर्फ घर में वबाल मचाया बल्कि अपने पापा से यह भी कह दिया कि यदि आज के बाद मेरे लिए कोई रिश्ते लेकर आए तो मैं घर छोड़कर चली जाऊँगी। उसकी इन बातों ने उसके पिता को बुरी तरह झकझोर दिया। वे डर गए कि कहीं उनकी बेटी शादी के दबाव के चलते कोई गलत कदम न उठा ले। अंततः उन्होंने तय किया कि अब उसके लिए कोई नया रिश्ता नहीं देखेंगे।

वहीं पिछले दिनों जब रागिनी अपनी एक सहेली की बहन की शादी में गई तो वहाँ पाया कि नया जोड़ा और कई अन्य शादीशुदा जोड़े पूरी तन्मयता से विवाह की रस्में एन्जॉय कर रहे थे। यही नहीं कुछ रस्में तो बड़ी ही दिल छू लेने वाली थीं और कई अविवाहित युवक-युवतियाँ भी मनोयोग से उन्हें देख-सुन रहे थे। इसके कुछ ही दिनों बाद रागिनी का अपनी बचपन की सहेली रेशमी के घर जाना हुआ। उसने वहाँ देखा कि किस तरह रेशमी का पति देवेश उसकी छोटी-छोटी चीजों का ध्यान रखता है। वह अपने से ज्यादा रेशमी की फिक्र करता है। इन सभी बातों के कारण अंततः रागिनी के मन में भी शादी करने की भावना जागने लगी।

रागिनी ही नहीं बल्कि ज्यादातर लड़कियाँ जो 20 साल के पड़ाव से गुजर रही होती हैं, शादी से दूर भागती हैं। दरअसल कहने का मतलब यह है कि जमाना बदल चुका है, सोच-विचार में खुलापन आया है, लिव-इन-रिलेशनशिप तक को अर्ध कानूनी मान्यता मिल चुकी है। इन सबके बावजूद शादी आज भी हमारी जख्त है।

अच्छी बात यह है कि इस दौर में भी शादी के मायने हमारे लिए नहीं बदले हैं। हम यह भलीभाँति जानते हैं कि हमें हर मोड़ पर किसी व्यक्ति की जख्त होती है जो हमारी

बातों को हमारी आँखों से समझ जाए। कोई ऐसा हो जो हमें हमसे बेहतर जानता हो, हमारे लिए जीता हो। शादी हमारी भावनाओं को भी एक खास मुकाम देती है।

अक्सर देखा जाता है कि 30 या 35 साल की उम्र के बाद जो पुरुष या महिला अकेले होते हैं, उन्हें अकेलापन कचोटता है। वे अपनी तन्हाइयों से घिरे होते हैं। नतीजतन आम लोगों को तुलना में ये ज्यादा कठोर हो जाते हैं। समाजशास्त्रियों का मानना है कि ताउम्र अकेले रहना कोई आसान काम नहीं है। अकेले में न हमारी भावनात्मक जख्तें पूरी हो पाती हैं, न ही हम अपने दिल की बात किसी से शेयर कर पाते हैं। फिर समाज ऐसी महिलाओं क्या पुरुषों तक को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता।

वजह चाहे जो भी हो महिला हो या पुरुष दोनों के लिए ही जीवनसाथी की बेहद जख्त होती है। जिंदगी जीने के लिए हमारे पास एक साथी का होना बहुत जरूरी है। सिर्फ इसलिए नहीं कि हमें समाज का हिस्सा बनना है बल्कि इसलिए भी क्योंकि यह हमारी मानसिक जख्त है वरना हम जिंदगी के हर मोड़ पर खुद को अकेला पाते हैं और इसकी पूर्ति कोई अन्य शख्स नहीं कर सकता। सो, जिंदगी चाहे कितनी ही तेजी से आगे क्यों न बढ़ रही हो, समय हमारे लिए जीवनसाथी की कमी को कभी पूरा नहीं कर सकता। अतः शादी आज भी हमारे लिए उतनी ही अहम है जितनी कि पुराने जमाने में हुआ करती थी।



## महिलाओं में स्लिम दिखने की चाहत

**स्लि**म दिखने के साथ हर वक्त फिट रहना महिलाओं की पहली चाहत बन रही है। दिल्ली और मुंबई, कोलकाता, चैन्नई, बैंगलुरु पुणे, हैदराबाद, नागपुर, भोपाल आदि बड़े शहरों में आधुनिक महिलाएं अपने फिटनेस पर ज्यादा ध्यान देने लगी हैं। योग, जिम या एरोबिक्स कुछ भी करके वह अपने आप को फिट रखना चाहती हैं।

अपना मनपसंद खाना छोड़ सुप और सलाद खाकर रहती हैं। रेस्तरां में भी वे ऐसी चीजें मंगवाती हैं, जो सेहत के हिसाब से उनके लिए सही हों। ज्यादा तला-भुना या मसालेदार खाने से उन्हें परहेज है। महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा अपनी फिटनेस को लेकर जागरूक हो रही हैं। वह फिटनेस एक्सपर्ट के पास जाकर एक्सरसाइज और डाइट के बारे में जानने लगी हैं। कई फिटनेस एक्सपर्ट की राय में महिलाएं पहले के मुकाबले अब कहीं ज्यादा चुस्त दिखना चाहती हैं।

### स्कीन की ज्यादा देखभाल

महिलाएं न सिर्फ सेहत, बल्कि अपनी स्कीन की भी पूरी देखभाल करती हैं। सौंदर्य प्रसाधनों से बाजार भर पड़ा है। जगह-जगह ब्यूटी सैलून खुल गए हैं, जो महिलाओं को सुंदर बनाने में सुबह से शाम तक जुटे रहते हैं। साधारण मॉश्चराइजर से लेकर एंटी टैनिंग और एंटी एजिंग क्रोम का इस्तेमाल बढ़ रहा है। बढ़ती उम्र चेहरे पर न दिखे, इसके लिए तीस पार कर चुकी महिलाएं हर तरह का जतन करती हैं। कोमिस्ट की दुकान चला रहे राज भागव का कहना है कि महिलाएं उनसे एंटी एजिंग क्रोम की ज्यादा डिमांड करती हैं। क्रोम काफी महंगी पड़ती है, पर बात जब खूबसूरती की हो, तो फिर पैसे की बात कहां।

### योग पर भी ध्यान

जिम और एरोबिक्स के साथ योग आधुनिकों की आदत में शुमार हो चुका है। चुस्त और पतली दिखाने की चाह में। बूटकैंप और मसाला योग दो ऐसे व्यायाम हैं, जिन्हें युवतियाँ और महिलाएं ज्यादा पसंद कर रही हैं। जिम में भी युवतियाँ खासी दिलचस्पी ले रही हैं। जिम चला

रहे कई लोगों की राय में महिलाओं की मेंबरशिप में पहले से करीब 35 प्रतिशत इजाफा हुआ है।

### खान-पान में बदलाव

युवतियों और महिलाओं में खान-पान को लेकर काफी बदलाव आया है। महिलाओं ने अपने खान-पान में खासा फेरबदल किया है। ज्यादा तला-भुना, ज्यादा मसालेदार या वैसी चीजें जो उनके वजन को अनियंत्रित कर दें, उन्हें बिल्कुल खाना पसंद नहीं करती। अपनी डाइट में मल्टीग्रैन, ऑरगेनिक फूड, सूप और सलाद जैसी चीजें शामिल करती हैं। आरोगिक फूड की सबसे ज्यादा डिमांड है। एक सर्वे के अनुसार दस में से आठ महिलाएं चाहे, वह हाउसवाइफ हो या वर्किंग, हर किसी ने अपने खान-पान में बदलाव किया है।

### चाहिए स्लिम फिगर

अपने वेस्ट और हिप साइज को सही रखने के लिए महिलाएं खूब परीक्षा बहाती हैं। ज्यादा से ज्यादा युवतियाँ और महिलाएं डाक्टर के पास सिर्फ यह पूछने जाती हैं कि वे अपने वजन को कैसे कम करें ताकि वे मोटापा, हाइपरटेंशन और

डायबीटिस से बच सकें। महिलाएं अब अपने पसंदीदा स्टाइल को फिट रहने के तरीके बताते हुए देखती हैं, तो उन्हें उन पर भरोसा बढ़ जाता है। फिटनेस आइकन जैसे बिपाशा बसु, शिल्पा शेठ्टी, प्रिटी जिंटा और लारा दत्ता जैसी दिखने के लिए पूरा जोर लगा देती हैं।

### पहनावा भी बदला

महिलाएं जहां पहले साड़ी और सलवार कमीज में लिपटी होती थीं, वहीं अब तरह-तरह के परिधान बाजार की शोभा बढ़ा रहे हैं। इन्हें पहनने के लिए महिलाओं का फिट होना बेहद जरूरी है। जींस-टॉप, मिनी स्कर्ट, कैप्री, लैंगिंग्स, कुर्ती इन सब के लिए शरीर सही शेप में होना चाहिए।







## विटामिंस की खोज किसने की?

यह सभी जानते हैं कि विटामिन रासायनिक पदार्थ होते हैं जो हमारे शरीर के स्वस्थ रहने के लिए जरूरी हैं। विटामिंस अलग-अलग तरह के भोजन में पाए जाते हैं। वैज्ञानिक विटामिंस के 6 प्रकारों को 'ए', 'बी', 'सी', 'डी', 'ई' और 'के' कहते हैं। असल में विटामिन 'बी' में विटामिंस का पूरा समूह होता है।

क्या आप जानते हैं कि विटामिंस की खोज किसने की? विटामिन की खोज एक डच जीवाणु विशेषज्ञ, क्रिश्चियान एडकमैन (1858-1930) द्वारा अचानक ही हो गई थी। उन्होंने सबसे पहले ध्यान दिया कि जो मुर्गियां चावल के दाने खाती थीं वे बीमार पड़ गईं। उन्होंने यह कारण खोज निकाला कि अनाज की ऊपरी सतह को यदि हटा दिया जाए तो उसमें मौजूद रसायन भी निकल जाते हैं जिसे हम विटामिन कहते हैं। जब एडकमैन 1886 में इंडोनेशिया दौरे पर 'बेरी-बेरी' नामक महामारी की पड़ताल करने गए तो उनके दावों को और अधिक सच माना गया। बाद में वह यह साबित करने में सक्षम रहे कि 'बेरी-बेरी' का रोग डाइट की कमी से होता है। इससे विटामिंस की खोज हुई और यह बात सामने आई कि विटामिन सेहत के लिए बहुत जरूरी है।

एडकमैन, हालांकि पूरी तरह से विटामिंस के बारे में नहीं समझ पाए। बाद में फेडरिक हॉपकिन जो ब्रिटिश वैज्ञानिक थे, ने इस सिद्धांत को समझा कि मानव शरीर को कुछ मात्रा में ऐसे रसायनों की आवश्यकता है जो उन्हें सेहतमंद रख सकें। उन्होंने यह कहा कि रिकेट्स या स्कर्वी जैसे रोगों से बचा जा सकता है यदि भोजन में या किसी दूसरी चीज में जरूरी रसायन यानी कि विटामिंस लिए जाएं। ऐसा बिल्कुल सही माना गया और विटामिंस के प्रकारों को नाम भी दिए गए।

वास्तव में विटामिंस के कई स्रोत तथा उपयोग हैं जैसे विटामिन 'ए', मक्खन, दूध, अंडे, हरी सब्जियों और मछली में पाया जाता है जो बीमारियों से लड़ने में सहायक होते हैं। विटामिन 'बी' भूख बढ़ाता है। यह तंत्रिकाओं तथा त्वचा में शक्ति बढ़ाता है। यह योस्ट, मोट तथा अलग-अलग अनाजों में पाया जाता है। विटामिन 'सी' खून साफ करने में सहायक है तथा जुकाम से सुरक्षा प्रदान करता है। यह मुख्य तौर पर फल जैसे संतरे तथा नींबू आदि में पाया जाता है।

हड्डियों की मजबूती के लिए विटामिन 'डी' की आवश्यकता होती है जो कॉड मछली के तेल तथा अंडे की जर्दी आदि में पाया जाता है। विटामिन 'ई' मोटे अनाजों और अन्य प्रकार के भोजन में पाया जाता है। विटामिन 'के' खून के बहाव को रोकने और क्लॉट के लिए विशेष रूप से जरूरी है। अतः चोट लगने पर खून के रिसाव को रोकने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह बहुत ही चीजों में मौजूद होता है जैसे लिबर तथा हरी सब्जियों इत्यादि में। ऊपर दिए गए तथ्यों से हमें पता चलता है कि विटामिंस

### विटामिन

### रोग

'ए'	रतौंधी
'बी'	बेरी-बेरी, तंत्रिका संबंधी समस्याएं
'सी'	स्कर्वी
'डी'	रिकेट्स
'ई'	खून की कमी
'के'	हमरेज

हमारी सेहत के लिए बहुत जरूरी हैं। इस महत्वपूर्ण खोज के लिए क्रिश्चियान एडकमैन और फेडरिक हॉपकिन को 1929 में नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया था।



## हंसो, हंसाओ, सेहत बनाओ

दोस्तों, तुम्हें कॉमेडी मूवीज देखना तो बहुत अच्छा लगता होगा। ऐसी मूवीज देखकर तुम खुद भी हंसते हो और किसी सुनाकर दोस्तों को भी हंसाते होगे। साथ में क्लास में भी मस्ती कर हंसी टहाके लगाते होगे। हंसते-हंसाते रहे, पर जान लो हंसने के फायदों के बारे में...

### वर्ल्ड हेल्थ डे

वर्ल्ड हेल्थ डे वर्ल्ड हेल्थ ऑरगनाइजेशन की तरफ से हर साल मनाया जाता है। इस साल वर्ल्ड हेल्थ डे ऐसे मच्छरों, जानवरों और कीड़े-मकोड़ों पर लोगों का ध्यान ले जा रहा है जो तरह-तरह की बीमारियां पैदा करते हैं। हंसने और खुश रहने से तुम्हारा मूड तो अच्छा रहता ही है साथ में तुम्हारी सेहत भी ठीक रहती है।

### इम्यून सिस्टम

#### ठीक रहेगा

हंसने मुस्कुराने से

तुम्हारा इम्यून सिस्टम अच्छा होगा। इम्यून सिस्टम अच्छा होने से तुम कई तरह की बीमारियों से बच सकते हो। साथ में तुम्हें सदा-जुकाम भी जल्दी नहीं होगा।

### टेशन फ्री होगे

दोस्तों के साथ हंसने और मस्ती करने से तुम्हें किसी तरह की चिंता नहीं होगी। साथ में तुम किसी भी मुश्किल काम को आसानी से कर लोगे। यही नहीं खुश रहने से शरीर में पैदा होने वाले ऐसे हार्मोन जो तनाव बढ़ाते हैं उनको भी कम करने में मदद करता है।

### दोस्तों में लोकप्रिय होगे

तुम्हारे खुश रहने से तुम्हारे दोस्त बढ़ते जाएंगे। ज्यादा से ज्यादा लोग तुम्हारे दोस्त बनना चाहेंगे। तुम्हारे पुराने दोस्तों से दोस्ती और पक्की हो जाएगी। तुम्हें सबके साथ मिल-जुल कर काम करने में मजा आएगा।

### दिल की बीमारी से छुटकारा

आजकल अक्सर ही लोग इस बीमारी से परेशान रहते हैं। खुश रहने से इस तरह की बीमारियों से तो छुटकारा मिलेगा ही हार्ट अटैक की सम्भावना भी कम होती है।

### दर्द कम होगा

खुश रहने और हंसने-मुस्कुराने से दर्द कम होता है। साथ ही तुम किसी भी तरह की बीमारी से आसानी से निपट लोगे।

### आत्मविश्वास बढ़ता है

खुश रहने से आत्मविश्वास बढ़ता है। साथ में किसी भी काम को करने के लिए नए-नए आईडियाज भी तुम्हारे दिमाग में तेजी से आते रहेगे।

### लम्बे समय तक जीओगे

जो लोग खुश रहते हैं वो लोग लम्बे समय तक जीते हैं। इसका मतलब है कि वो दुखी रहने

वाले लोगों की तुलना में ज्यादा दिनों तक जीते हैं।

### ब्लड प्रेशर कम रहता है

आजकल तुमने ब्लड प्रेशर से परेशान लोगों के बारे में तो सुना ही होगा। खुश रहने से शरीर में ब्लड का प्रेशर भी ठीक रहता है और ब्लड प्रेशर भी कम होता है।

### मेमोरी बढ़ती है

खुश रहने से न केवल तुम्हारी मेमोरी बढ़ती है बल्कि तुम्हारे अंदर कुछ सीखने की क्षमता का भी तेजी से विकास होता है। तुम कुछ नया सीखने को उत्साहित रहते हो और इसीलिए तुम्हारी रचनात्मकता भी बढ़ती जाती है। यही नहीं हंसने-मुस्कुराने से तुम्हारी क्रेिएटिविटी भी बढ़ती है।

### अच्छी नींद आती है

खुश रहने से तुम्हें नींद भी अच्छी आती है। इसका मतलब है कि तुम्हारे घर में जो बुजुर्ग नींद नहीं आने की प्रॉब्लम से परेशान हैं उनकी समस्या खुश रहने से हल हो जाएगी। इसलिए तुम उनकी मदद करो।

## डॉग्स के लिए बन रहा होटल चेल्सी

इंसानों के होटल तो सभी जगह बने होते हैं, लेकिन पेट्स के लिए होटल न के बराबर हैं। कई पेट्स मालिक अपने पेट्स को अपने जैसे होटल में स्टे कराना चाहते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते



हुए न्यूयॉर्क में एक ऐसा ही होटल बनाया जा रहा है, जिसमें एंटी सिर्फ कुत्तों की होगी। यह होटल जल्द ही शुरू हो रहा है। इस होटल को सामान्य होटलों की कैटेगरी में रखा गया है, जिसमें नॉर्मल, डीलक्स और सूट शामिल होंगे। इसका नाम होटल चेल्सी रखा गया है। इसमें डबल बेड के अलावा नर्म और स्पंज वाले पि्लो होंगे। रूम में फ्लैट स्क्रीन टीवी रखा गया है। इस टीवी में जानवरों से संबंधित कार्यक्रम चलते रहेंगे, जैसे वाइल्ड लाइफ आदि। इसके अलावा रूम का डेकोरेशन कुत्तों को ख्याल में रखकर किया गया है। कुत्ते को फिट रखने के लिए फिटनेस सेंटर भी बनाया गया है। खाना बनाने के लिए शैफ भी रखे जाएंगे। यहां के सारे रूम सीसीटीवी से लैस होंगे, जिससे अगर कुत्तों को रूम में किसी तरह की परेशानी हो तो कंट्रोल रूम में देखकर उसका समाधान कर दिया जाएगा।

## क्या जानवर रंग पहचानते हैं?



जानवरों की रंग पहचानने की क्षमता का पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों ने काफी परीक्षण किया है, जिससे पता चलता है कि कुछ जीव रंगों की पहचान करने में सफल हो गये तो कुछ रंग नहीं देख सके।

मछलियां बहुत सुंदर और रंग-बिरंगी होती हैं, लेकिन ये एक-दूसरे की खूबसूरती को देख नहीं सकतीं, क्योंकि ये रंगों को नहीं पहचान पाते। वे किसी भी स्थान या वस्तु को उसके रंग से नहीं, गंध से पहचानते हैं।

एक परीक्षण में कुछ कुत्तों को पहले खास तरह की आवाजें सुनाई गईं। इन आवाजों के बाद ही उन्हें भोजन दिया जाता था। कुछ दिन के प्रशिक्षण के बाद देखा गया कि इन ध्वनियों को बजाते ही कुत्तों के मुंह लार से भर जाते थे। बाद में यही प्रयोग रंगों को लेकर किया गया। लेकिन कुत्ते, भोजन की लालसा के बावजूद एक रंग का दूसरे से विभेद करने में सफल नहीं हो पाये। बिल्लियां भी रंगों को नहीं पहचानती हैं।

मुर्गियों के बारे में परीक्षण करने से पता चला है कि वे हरे, नीले, काले और बैंगनी रंग को नहीं पहचानतीं, जबकि सफेद रंग को पहचान लेती हैं।

बंदर रंगों के प्रति संवेदनशील होता है और वह अलग-अलग रंगों की पहचान कर सकता है। कुछ परीक्षणों ने इसकी पुष्टि भी की है। बंदरों को भोजन के लिए एक ऐसी अलमारी के पास जाने के लिए प्रशिक्षित किया गया, जिसका दरवाजा एक खास रंग से रंगा गया था। बाद में उसने दूसरे रंग से रंगे दरवाजे वाली अलमारी के पास जाने में दिलचस्पी लेना ही बंद कर दिया।

गाय, बेल, गधे जैसे पशु प्रायः सभी वस्तुओं को खाकी रंग में रंगा पाते हैं। एक सीमा तक सफेद रंग को भी पहचान लेते हैं, लेकिन गहवा हरा, लाल, नीला या काला रंग नहीं पहचान सकते।

अनेक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि सांड रंग के प्रति अंधा होता है, अर्थात् वह रंग भेद नहीं कर सकता। जब वह रंग पहचान ही नहीं सकता, तो फिर लाल रंग से भड़क उठने की बात महज एक गलत धारणा है। सांड को भड़काने के लिए कपड़े का हिलाना ही काफी है, चाहे वह लाल, पीला, नीला सफेद या किसी भी रंग का हो।

घोड़े हरे व पीले रंग को पहचान लेते हैं तथा दोनों में भी परस्पर भेद कर लेते हैं, पर लाल व नीले रंग को पहचानने में वे अच्छे नहीं जान पड़ते हैं।





## अडानी ग्रीन की कंपनी को मिली 150 मेगावाट की सौर परियोजना मिली

नई दिल्ली: अडानी ग्रीन एनर्जी की कंपनी एआरईएचएफएफटीएनएल ने टेंटर पत्र से 150 मेगावाट क्षमता की सौर ऊर्जा परियोजना का अनुबंध प्राप्त किया है। अडानी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एजीईएल) की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी, अडानी रिन्यूएबल इनजीनियरिंग फिफटीन लिमिटेड (एआरईएचएफएफटीएनएल) ने गुजरात में स्थापित किए जाने वाली और पिछले से जोड़ी जाने वाली इस सौर फोटोवोल्टिक विद्युत परियोजनाओं के लिए प्रतिस्पर्धी बोलीयों की प्रक्रिया के माध्यम से यह परियोजना हासिल की। शेर बाजार बीएसई को दी गई सूचना में कहा गया है कि एआरईएचएफएफटीएनएल को 150 मेगावाट क्षमता वाली सौर ऊर्जा परियोजना प्रदान की गई है। इस परियोजना के लिए निर्धारित शुल्क, 25 वर्ष की अवधि के लिए 2.22 रुपए प्रति किलोवाट है। इस परियोजना के वित्तवर्ष 2023 के तीसरी तिमाही तक चालू होने की उम्मीद है। इसमें कहा गया है कि मौजूदा समय में कंपनी की 3,520 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं चालू हैं। इसके साथ, एजीईएल के पास अब कुल पोर्टफोलियो 15,390 मेगावाट अक्षय ऊर्जा परियोजना की क्षमता है, जिसमें से 11,870 मेगावाट की परियोजनाएं कार्यान्वयन के चरण में हैं।

## ग्लेनमार्क फार्मा की इकाई ने आईपीओ के लिये सेबी के पास दस्तावेज जमा कराये

नयी दिल्ली, औषधि क्षेत्र की कंपनी ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल्स ने शनिवार को कहा कि उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी ग्लेनमार्क लाइफ साइंसेज ने प्रारम्भिक सार्वजनिक निगम (आईपीओ) के लिये पूंजी बाजार नियामक सेबी के पास मसौदा जमा करा दिया है। कंपनी ने नियामकीय सूचना में कहा है कि ग्लेनमार्क लाइफ साइंसेज ने प्रारम्भिक सार्वजनिक पेशकश के लिये पूंजी बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) के पास विवरण पुरितका का मसौदा (डीआरएफपी) जमा करा दिया है। नियामकीय सूचना में कहा गया है कि ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड इकाई ग्लेनमार्क लाइफ साइंसेज लिमिटेड के दो रुपये अतिरिक्त मूल्य वाले अपने पास के 73,05,245 शेयर बाजार में बिक्री की प्रस्तुति (ओएफसी) के जरिए बेचेगी तथा 1,160 करोड़ रुपये के नए शेयर पेश किए जाएंगे। ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड के निदेशक मंडल ने 16 अप्रैल को हुई अपनी बैठक में आईपीओ के एक हिस्से के तौर पर दो रुपये प्रति शेयर मूल्य वाले 73,05,245 इक्विटी शेयरों की बिक्री पेशकश को मंजूरी दे दी।

## टाटा स्टील माइनिंग फेरो क्रोम विनिर्माण क्षमता दोगुना करेगी

कोलकाता। टाटा स्टील माइनिंग ने कहा कि कंपनी का लक्ष्य निकट भविष्य में फेरो क्रोम विनिर्माण क्षमता को 4,50,000 टन से बढ़ाकर 9,00,000 टन प्रतिवर्ष करने की है। टीएसएमएल ने कहा कि उसने वर्ष 2020 को खनिज नीलामियों में तीन क्रोमाइट खानों का अधिग्रहण किया था जो सुकिदा क्रोमाइट माइन, सारुण्बिल क्रोमाइट माइन और कामर्दा क्रोमाइट माइन हैं। अधिकारियों ने कहा कि इन खानों की लीज 50 साल के लिए है। एक बयान में कहा गया है कि खानों में अब 15 लाख टन की वार्षिक क्षमता के साथ चालू हो गई हैं, जिससे कंपनी भारत में क्रोम अयस्क खनन में सबसे बड़ी कंपनी बन गई है। टाटा स्टील माइनिंग लिमिटेड के चेयरपर्सन डीबी सुंदर रामम ने कहा कि हम क्रोम अयस्क की अच्छी गुणवत्ता का लाभ उठाते हुए भारत में अपनी फेरो क्रोम विनिर्माण क्षमता को बढ़ाने का प्रयास करेंगे। यह टीएसएमएल को भारत में सबसे अग्रणी फेरो क्रोम कंपनी बना देगा और वैश्विक स्तर पर उसे शीर्ष पांच में स्थान दिलाएगा।



# (शेयर बाजार साप्ताहिक समीक्षा) सप्ताह में दो दिन गिरावट, दो दिन तेजी रही

मुंबई।

एचडीएफसी बैंक, एचडीएफसी, एशियन पेंट्स और एचसीएल टेक के शेयरों में बढ़त से शुक्रवार को भारतीय शेयर बाजार तेजी के साथ बढ़ा। पिछले सप्ताह शेयर बाजार में बुधवार को बाबा साहेब अंबेडकर की जयंती के अवसर पर अस्वस्थ रहने के कारण पांच दिन में से केवल चार दिन कारोबार हुआ जिसमें दो दिन सोमवार और गुरुवार को गिरावट और मंगलवार और शुक्रवार को शेयर बाजार में तेजी दर्ज की गई। पिछले चार दिन के कारोबार पर नजर डालें तो सप्ताह के पहले कारोवारी दिन सोमवार को बीएसई का 30 शेयरों वाला संसेक्स गुरुवारी

कारोबार में 1,427 अंकों की गिरावट के साथ 48,164.32 पर खुला और 1707.94 अंक गिरकर 47,883.38 पर बंद हुआ। वहीं व्यापक एनएसई निफ्टी 431.90 अंक गिरकर 14,402.95 पर खुला और 524.05 अंक की गिरावट के साथ 14,310.80 पर बंद हुआ। मंगलवार को संसेक्स 236.71 अंक बढ़कर 48,120.09 पर खुला और 210.33 अंक की बढ़त के साथ 48,093.71 पर बंद हुआ। निफ्टी 68.55 अंक बढ़कर 14,379.35 पर खुला और 72.95 अंकों की तेजी के साथ 14,383.75 पर बंद हुआ। गुरुवार को

संसेक्स 216.73 अंक 0.45 प्रतिशत की गिरावट के साथ 48,327.33 पर खुला और 259.62 अंक की बढ़त के साथ 48,803.68 पर बंद हुआ। निफ्टी 62.55 अंक फिसलकर 14,442.25 पर खुला और 76.65 अंक मजबूत होकर 14,581.45 पर बंद हुआ। शुक्रवार को संसेक्स 161.6 अंक की तेजी के साथ 48,965.28 पर खुला और 28.35 की बढ़त के साथ 48,832.03 पर बंद हुआ। निफ्टी 55.75 अंक की बढ़त के साथ 14,637.20 पर खुला और 36.40 अंक के साथ 14,617.85 अंक पर बंद हुआ।



## एचडीएफसी बैंक: चौथी तिमाही में 18.1 फीसदी बढ़ा शुद्ध लाभ, एनपीए में भी हुई वृद्धि

बिजनेस डेस्क:

एचडीएफसी बैंक ने शनिवार को 31 मार्च 2021 को समाप्त तिमाही के नतीजों की घोषणा कर दी है। इस दौरान बैंक का शुद्ध लाभ 18.1 फीसदी बढ़कर 8,186.51 करोड़ रुपए रहा। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में बैंक को 6,927.69 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ हुआ था। इस तिमाही में शुद्ध ब्याज आय (NII) 12.6 फीसदी बढ़कर 17,120 करोड़ रुपए हो गई। जबकि 31 मार्च 2020 को समाप्त तिमाही में यह आंकड़ा 15,204 करोड़ रुपए था। तिमाही-दर-तिमाही आधार पर एचडीएफसी बैंक का सकल गैर-निष्पादित आस्तियां (एनपीए) 1.32 फीसदी बढ़ा, जो वित्त वर्ष 2021 की तीसरी तिमाही में 0.81 फीसदी था। बैंक का शुद्ध एनपीए 0.40 फीसदी रहा। एचडीएफसी बैंक ने हाल ही में स्टॉक एक्सचेंजों को सूचित किया था कि उसका जमा आधार 31 मार्च को लगभग 13.35 लाख करोड़ रुपए हो गया है। साल-दर-साल आधार पर इसमें लगभग 16.3 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई। बैंक ने कहा कि चौथी तिमाही में उसका कम लागत वाला चालू खाता और बचत खाता (Casa) जमा 27 फीसदी बढ़कर 6.15 लाख करोड़ रुपए हो गया। विश्लेषकों को उम्मीद थी कि साल-दर-सार आधार पर बैंक का शुद्ध लाभ 23 फीसदी बढ़कर 8,550.3 करोड़ रुपए और शुद्ध ब्याज आय 12 फीसदी की वृद्धि के साथ 17,000 करोड़ रुपए होगी।

पिछले कारोवारी दिन 1,430.90 के स्तर पर बंद हुआ था शेयर पिछले कारोवारी दिन 1,434.95 के स्तर पर खुलने के बाद एचडीएफसी बैंक का शेयर 0.80 अंक (0.056 फीसदी) ऊपर 1,430.90 के स्तर पर बंद हुआ। मौजूदा समय में बैंक का बाजार पूंजीकरण 7.87 लाख करोड़ रुपए है। एचडीएफसी बैंक ने कहा कि देश में कोरोना वायरस के मामलों में भारी उछाल से भविष्य में बैंक के नतीजे प्रभावित होंगे। बैंक के परिणाम अनिश्चितताओं पर निर्भर होंगे।

# अमेजन-पे के जरिये 50 लाख कारोबारियों को पंजीकृत किया, छोटे, मझौले कारोबारियों पर ध्यान: अमेजन

नयी दिल्ली,

आनलाइन मंच के जरिये उत्पादों की बिक्री सुविधा देने वाली कंपनी अमेजन ने शनिवार को कहा कि उसने अमेजन-पे के जरिये 50 लाख कारोबारियों को पंजीकरण किया। कंपनी ने कहा कि वह भारत में डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिये छोटे और मझौले उद्यमों (एसएमबी) की मदद पर उसका ध्यान दे रही है। अमेजन-पे कंपनी की भुगतान प्रणाली कंपनी है। कंपनी ने कहा है कि इन पंजीकृत व्यवसायियों में से बहुत से पहले केवल नकद भुगतान ही स्वीकार किया करते थे लेकिन अब वे अमेजन-पे के क्यूआर कोड का इस्तेमाल करते हुए ग्राहकों से भुगतान करवा कर रहे हैं। अमेजन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रसेल ग्रान्डिने ने 'अमेजन संभव' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा, "2019 के बाद से अमेजन-पे के जरिये हमने 50 लाख व्यवसायियों को पंजीकृत किया है और चार करोड़ ग्राहकों ने हमारी इस सेवा के जरिये यूपीआई का इस्तेमाल किया है। इस समूचे परिवेश में हम अकेले नहीं हैं, अमेजन की तरह और भी कंपनियां और हमारे प्रतिस्पर्धी सभी यदि मदद करेंगे तो यह चक्र और भी तेजी से घूमेगा।" उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया में सरकारों और संगठन न केवल भारत के आधार, इंडिया स्टैक और यूपीआई को लेकर उत्साहित हैं बल्कि वह अपने देश में भी इस तरह की व्यवस्था को शुरू करने को लेकर काम कर रहे हैं। ग्रांडिने ने भारत में आधार, ई-केवाईसी और यूपीआई का जिक्र करते हुए कहा कि प्रणालियों के आधार पर व्यक्तिगत विक्रेताओं को देशभर में ग्राहकों तक पहुंचने में मदद मिली है। इनके जरिये राज्य की सीमाओं पर आर्डर पहुंचाने में भी आसानी हुई है। अमेजन-पे इंडिया ने इस उम्मीद पर कहा कि छोटे मोटे कारोबार की डिजिटल भुगतान स्वीकार करने योग्य बनाकर कंपनी इन सभी का डिजिटल भारत में समावेश किये जाने की उम्मीद कर रही है। देश में अमेजन-पे को इस्तेमाल करने वाले 50 लाख छोटे और मझौले व्यवसायियों में से 25 लाख से अधिक खुदरा और किराना स्टोर जैसी दुकानों को चलाते हैं। करीब 10 लाख खाने-पीने के छोटे रेस्त्रां और स्टॉल चलाते हैं। पांच लाख से अधिक सैलून सेवार्थ, चार लाख के



करीब स्वास्थ्य और चिकित्सा देखभाल सेवार्थ उपलब्ध कराते हैं। शेष कुछ टैक्सि चालक, आटो चालक, प्लंबर और अन्य प्रकार की सेवार्थ देते हैं। इन्फोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणि ने इस उम्मीद पर कहा कि छोटे मोटे कारोबार ही भारत का भविष्य हैं। उन्होंने कहा, "मेरा मजबूती के साथ यह मानना है कि वह आर्थिक वृद्धि और रोजगार सृजन के इंजन हैं। मेरा यह भी मानना है कि उनका बहुत बेहतर भविष्य है... वह डिजिटल मामले में और अधिक जानकार भी बन रहे हैं।"

# नहीं लगा लॉकडाउन, तो चालू तिमाही में 7% बढ़ सकती हैं हायरिंग गतिविधियां: रिपोर्ट

बिजनेस डेस्क:

कोरोना काल में कई लोगों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा तो वहीं कुछ लोगों के वेतन में कटौती हुई। अगर पिछले साल की तरह इस साल लॉकडाउन नहीं लगा, तो चालू तिमाही यानी अप्रैल से जून 2021 में कॉर्पोरेट सेक्टर में 7 फीसदी ज्यादा नौकरियां पैदा हो सकती हैं। यह बात टीमलीज की इम्प्लॉयमेंट आउटलुक रिपोर्ट में कही गई है। इन क्षेत्रों में बढ़ी मांग रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि हेल्थकेयर, फार्मास्यूटिकल्स, एजुकेशनल सर्विसेज, ई-कॉमर्स एंड टेक्नोलॉजी स्टार्टअप और आईटी क्षेत्र से हायरिंग की मांग आ रही है। हेल्थकेयर और फार्मास्यूटिकल्स सेक्टर की 58 फीसदी से भी अधिक कंपनियां नई भर्तियां करने के लिए तैयार हैं, जबकि इस क्षेत्र में पिछली तिमाही यह आंकड़ा 11 फीसदी था। 55 फीसदी एजुकेशनल सर्विसेज कंपनियां, 51 फीसदी ई-कॉमर्स एंड टेक्नोलॉजी स्टार्टअप, 50 फीसदी आईटी कंपनियां, 46 फीसदी एफएमसीजी कंपनियां और नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग कंपनियां, 41 फीसदी एग्रीकल्चर-एग्रीकेमिकल्स कंपनियां और 39 फीसदी टेलिकम्यूनिकेशन कंपनियों ने हायरिंग की इच्छा जताई है। मालूम हो कि सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि सरकारी नीतियां और वैश्वीकरण की वजह से अधिकांश देशों में नौकरियां बढ़ने की उम्मीद है। इस बीच कोरोना की नई लहर के कारण कुछ आशंकाएं भी हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) सहित कई वित्तीय संस्थाओं ने भारत की जीडीपी में दो अंकों में वृद्धि की उम्मीद जताई है। देश में कई शहरों में सामान्य संख्या में नई नौकरियां मिलेंगी। इन शहरों में सामान्य संख्या में नई



नौकरियां गुरुग्राम में 29 फीसदी, चेन्नई में 27 फीसदी, पुणे में 27 फीसदी, मुंबई में 33 फीसदी और कोलकाता में 25 फीसदी नई नौकरियां मिलेंगी। कुल मिलाकर सकारात्मक माहौल है लेकिन एनर्जी, बीपीओ/आईटीई, मीडिया, एंटरटेनमेंट जैसे क्षेत्रों में नई नौकरियां को लेकर उत्साह लौटने में समय लग सकता है।

# Jack Ma को फिर निशाना बना रही चीनी सरकार! अब उठाया ये कदम

बिजनेस डेस्क:

चीनी अरबपति जैक मा को सरकार की आलोचना भारी पड़ रही है। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा एक बार फिर से जैक मा और उनकी कंपनी अलीबाबा को निशाना बनाया जा रहा है। पिछले छह महीने से कम समय में ये तीसरा मौका है जब जैक मा के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। सोमवार को, राज्य-संचालित सिन्हूआ न्यूज एजेंसी का हवाला देते हुए, निक्केई एशिया ने बताया कि चार सरकारी एजेंसियों ने अलीबाबा संबद्ध Ant ग्रुप के साथ जॉइंट रेगुलेटरी बातचीत की थी। ये चार सरकारी एजेंसियां थीं- पीपुल्स बैंक



ऑफ चाइना, चाइना बैंकिंग एंड इंश्योरेंस रेगुलेटरी कमीशन, चाइना सिविल एरियाटिज रेगुलेटरी कमीशन और स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ फॉरिन एक्सचेंज। सिन्हूआ ने बताया कि सेंट्रल बैंक के डिप्टी कर्मियों में से एक, पैन गैंगशेंग ने चारों विभागों की ओर से संबद्धताओं के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि वित्तीय अधिकारियों द्वारा एंटी ग्रुप पर फिर से सवाल उठाने का कारण एकाधिकार को रोकना और पूंजी के गलत तरीके से वित्तांतर को रोकना था। निक्केई एशिया के मुताबिक, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अक्टूबर के बाद से इसी तरह कार्रवायों का हवाले देते हुए कार्रवाई कर रही है। क्या कहना है चीन सरकार का? चीन सरकार का कहना है कि बाजार के एकाधिकार पर अंकुश लगाना और पूंजी के अत्यवस्थित विस्तार को रोकने के लिए ही इस तरह के कदम उठाए जा रहे हैं। रिपोर्ट में लिखा गया है कि इस तरह के नए बनाए गए नियमों का सहारा लेकर शी जिनपिंग राजनीतिक मकसद पूरा करने में लगे हैं। शी ने अपने इस विरोधी भ्रष्टाचार अभियान का इस्तेमाल निजी कंपनियों के खिलाफ किया। रिपोर्ट में कहा गया कि चीन में जहां एक ही पार्टी के हाथ में सभी शक्तियां होती हैं, उसका किसी कंपनी के शीर्ष अधिकारियों से पूछताछ करने का मतलब कंपनी के लिए बुरा संकेत होते हैं, जबकि, अब से पहले दो बार पूछताछ हो चुकी है, तो फिर तीसरी बार पूछताछ क्यों?

# भारत से औषधियों का निर्यात पिछले वित्त वर्ष में 18% उछाल

हैदराबाद:

भारत से औषधियों का निर्यात पिछले वित्त वर्ष 2020-21 में 24.44 अरब डॉलर के बराबर रहा जो इससे एक साल पहले के 18 प्रतिशत से भी अधिक है। वर्ष 2019-20 में 20.58 अरब डॉलर के बराबर था। भारत से दवाओं के निर्यात में यह उछाल ऐसे समय दिखा है जब वैश्विक बाजार में हल्का संकुचन रहा। भारतीय औषधि निर्यात संवर्धन परिषद (फार्माविसल) के महानिदेशक उदय भास्कर ने शनिवार को जारी एक बयान में कहा मार्च, 2021 में हमने अपने निर्यात में तेज उछाल देखा और यह 2.3 अरब डॉलर (अर्न्तमिथ ऑफ़ डे) रहा। मार्च का निर्यात वित्त वर्ष के दौरान किसी भी माह की तुलना में सर्वाधिक है। मार्च माह की वृद्धि दर एक साल पहले के इसी माह के की तुलना में 48.5 प्रतिशत रही। मार्च 2020 में निर्यात 1.54 अरब डॉलर था। बयान में भास्कर के हवाले से कहा गया है कि पिछले वर्ष मार्च में लॉकडाउन लागू होने से निर्यात पर असर पड़ा था। वर्ष 2020 में वैश्विक औषधि बाजार में एक से



दो प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी। इसके विपरीत वर्ष के दौरान भारत से औषधियों की मांग में तेज उछाल दिखा। भारत की दवाओं की गुणवत्ता और इनके मूल्य की व्यवहारिकता के चलते इनकी मांग में तेजी रही। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में भारत से वैश्वीकरण के निर्यात में अच्छी वृद्धि होने की संभावना दिख रही है। इसी तरह भारत सरकार की उत्पादकता आधारित प्रोत्साहन योजना से औषधि क्षेत्र में अग्रगण्य पर निर्भरता कम होगी और निर्यात का आधार मजबूत होगा। उत्तर अमेरिका भारत की औषधियों के लिए निर्यात का सबसे बड़ा बाजार है। वर्ष के दौरान निर्यात में इस बाजार का हिस्सा 34 प्रतिशत रहा। उसके बाद दक्षिण अफ्रीकी बाजार का स्थान है। वहां के निर्यात में 28 प्रतिशत और यूरोपीय बाजार में निर्यात 11 प्रतिशत की दर से बढ़ा।

# 15 दिनों में 3 हजार रुपए महंगा हुआ सोना, और बढ़ सकते हैं दाम



बिजनेस डेस्क: कोरोना काल में सोने-चांदी की कीमतों में फिर से बढ़ोतरी देखने को मिली है। अप्रैल महीने में ही सोना 7 फीसदी महंगा होकर 47,169 पर पहुंच गया है। इस दौरान सोना 2,979 रुपए महंगा हुआ है। देश में कोरोना के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए एक्सपोर्ट को सोने में आगे और तेजी आने की उम्मीद है। स्फ़ड की बात करें तो सोना यहां भी 47,350 पर पहुंच गया है। चांदी की बात करें तो अप्रैल के चांदी भी 9 फीसदी महंगी हुई है। 31 मार्च को जब बाजार बंद हुआ था तब चांदी 62,862 रुपए प्रति किलोग्राम पर थी जो अब 68,810 रुपए पर पहुंच गई है यानी इस महीने ही ये 5,948 रुपए महंगी हुई है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने के दाम तेजी से बढ़ने लगे हैं। सोने की कीमत 1,777 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस के पार निकल गया है। 1 अप्रैल को सोना 1,730 अमेरिकी डॉलर पर था ऐसा ही माहौल बनने लगा है।

52 हजार तक जा सकता है सोना बहुरूप सिविलियरीज के वाइस प्रेसिडेंट (कमोडिटी एंड करेंसी) अनुज गुप्ता कहते हैं कि जब भी बाजार में अस्थिरता या अनिश्चितता का माहौल बनता है सोना महंगा होने लगता है। अभी भी कोरोना के कारण दुनियाभर में अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है। आने वाले महीने में सोना फिर 50 से 52 हजार तक पहुंच सकता है। पिछले साल कोरोना की पहली लहर में 56 हजार पर पहुंच गया था सोना पिछले साल जब कोरोना अपने चरम पर था तब सोने का भाव अपने हाई पर पहुंच गया था। अगस्त 2020 में 56,200 रुपए के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा था। उस समय कोरोना महामारी के कारण निवेशकों में डर का माहौल बना हुआ था। इस समय फिर एक बार ऐसा ही माहौल बनने लगा है।



**बार्सिलोना अध्यक्ष ने चलब में बने रहने के लिए मेसी को मनावा**

बर्लिन। स्पैनिश क्लब बार्सिलोना के अध्यक्ष जुआन लापोर्टा ने अपने स्टार फुटबलर लियोनेल मेसी को मना लिया है और मेसी अब क्लब के साथ बने रहने के लिए एक नया करार करेंगे। डीपीए की रिपोर्ट के अनुसार, 33 साल के अर्जेंटीना के मेसी का बार्सिलोना के साथ जारी करार सीजन के अंत में समाप्त होना है और ऐसे कयास लगाए जा रहे थे कि वह पैरिस सेंट जर्मेन या मैनचेस्टर यूनाइटेड के साथ जुड़ सकते हैं। बार्सिलोना इस समय कोपा डेल रे फाइनल में एथलेटिक बिल्बाओ के खिलाफ होने वाले मुकाबले की तैयारी कर रही है। लापोर्टा से जब छह बार के बल डी ओर विजेता मेसी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, सबकुछ तय कार्यक्रम के अनुसार हो रहा है। उन्होंने कहा, उन्हें क्लब के साथ बने रहने के लिए मैं हर्षभंगव कोशिश करूंगा और हम यही कर रहे हैं। मेसी प्रेरित हैं। वह अद्भुत इंसान हैं। मैंने उन्हें मना लिया है और वह बार्सिलोना के साथ बने रहना चाहते हैं। मेसी ने इस सीजन में ला लीगा मुकाबलों में बार्सिलोना के लिए 23 गोल और आठ असिस्ट किए हैं। उन्होंने 2020-21 में सभी प्रतियोगिताओं में 29 गोल दोगे हैं।



# आईपीएल-14 : केकेआर को हराकर जीत की हैट्रिक लगाना चाहेगा बेंगलोर

# यूथ मुक़ेबाजी : बेबी चानू सहित 6 भारतीय क्वार्टर फाइनल में



चेन्नई।

अपने शुरुआती दो मैच जीतने के बाद रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) टीम रविवार को एमए चिदंबरम स्टेडियम में कोलकाता नाइट राइडर्स (आरसीबी) का सामना करेगा और उसका लक्ष्य यह मैच जीतते हुए जीत की हैट्रिक लगाना होगा।

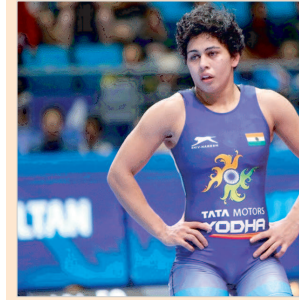
आरसीबी के लिए स्पिन फिर से एक महत्वपूर्ण हथियार होगा क्योंकि केकेआर ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ अपने पिछले मैच में स्पिन का सामना करने में असमर्थता जताते हुए लेग स्पिनर राहुल चाहर को चार विकेट दे दिए थे। और तो और एक समय प्रभावशाली जीत की स्थिति में दिख रही यह टीम 10 रनों से मैच हार गई थी। आरसीबी के बाएं हाथ के स्पिनर शाहबाज अहमद ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मैच में एक स्ट्रिकी पिच पर अहम भूमिका निभाई क्योंकि उन्होंने गेंद को घुमाया और एसआरए के बल्लेबाजों को अपना विकेट गंवाने पर मजबूर कर दिया। केकेआर के पास भी एक बहुत मजबूत स्पिन गेंदबाजी लाइन-अप है। दोनों पक्षों के स्पिनरों का प्रदर्शन रविवार को इन दोनों के बीच होने वाले इस सीजन के पहले मैच का परिणाम तय करेगा। यह दोपहर 3.30 बजे होगा। दिन में तो नहीं लेकिन जैसे-जैसे तापमान गिरगा तो गेंद रिविंग हो सकती है। आरसीबी के कप्तान विराट कोहली, जिन्होंने पहले दो मैचों में 33 (29 गेंद) के समान स्कोर प्राप्त किया है, वे सीजन का अपना पहला अर्धशतक लगाना चाहेंगे।

**टीमें:** केकेआर : शुभम गिल, नितीश राणा, टिम सेफर्ट (विकेटकीपर), राहुल त्रिपाठी, रिंकू सिंह, दिनेश कार्तिक (विकेटकीपर), इयोन मोगन (कप्तान), आंद्रे रसेल, सुनील नरेन, वरुण सीवी, कुलदीप यादव, पैट कमिंस, लांका फर्ग्यूसन, कमलेश नागरकोटी, शिवम मावी, संदीप वारियर, प्रसिद्ध कृष्णा, शाकिब अल हसन, शेल्डन जैक्सन, वैभव अरोड़ा, करुण नायर, हरभजन सिंह, बेन कटिंग, वेंकटेश अय्यर, पवन नेगी।

**रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर :** विराट कोहली (कप्तान), देवदत्त पंडिकल, फिन एलन (विकेटकीपर), एबी डिविलियर्स (विकेटकीपर), पवन देशपांडे, वाशिंगटन सुंदर, डैनियल लेम्स, युजवेंद्र चहल, एडम जम्पा, शाहबाज अहमद, मोहम्मद सिराज, नवदीप सैनी, केन रिचर्डसन, हर्षल पटेल, ग्लेन मैक्सवेल, सचिन बेबी, रजत पाटीदार, मोहम्मद अजहरुदीन, काइल जैमीसन, डैनियल क्रिश्चियन, सुयश प्रभुदेसाई, केएस भारत।

मैच दोपहर 3.30 बजे शुरू होगा।

(69 किग्रा), सनमचा थोचोम (75 किग्रा), खुशी (81 किग्रा) और अल्फिया (81 किग्रा) हैं। पुरुष वर्ग में, अंकित नरवाल (64 किग्रा) ने शानदार फुटवर्क और ताकत दिखाते हुए उज्बेकिस्तान के अखमदजान अखामेदोव को कड़ी टकरा दी और 5-0 से जीत दर्ज की। 75 किग्रा मिडिलवेट वर्ग में मनीष ने इजराइल के डैनियल इलुशोनोव को हराया। उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी को 4-1 से मात दी। अंकित और मनीष दोनों प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए हैं। एक अन्य भारतीय जुगुनू (91 किग्रा) को हलाकित अंतिम 16 के मुकाबले में 1-4 से हंगरी के लेवेंट किस के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा।



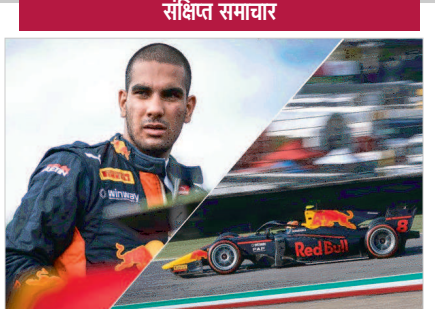
## पहलवान पूजा ढंडा कोरोना वायरस संक्रमित

हिसार : राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व कुश्ती चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीत चुकी पहलवान पूजा ढंडा ने बताया कि वह कोरोना वायरस जांच में पॉजिटिव मिली है। पूजा ने 2018 राष्ट्रमंडल खेलों में कांस्य पदक जीता था। वह विश्व कुश्ती चैम्पियनशिप में पदक जीतने वाली चौथी भारतीय महिला है। उन्होंने 2018 में 57 किग्रा भारवर्ग में कांस्य पदक जीता था। हिसार की पूजा ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा- मैं कोरोना पॉजिटिव पाई गई हूँ। जो लोग मेरे संपर्क में आए हैं वे जांच करवाएं और पृथक्वास में रहें। मैं भी पृथक्वास में हूँ। उनके पिता अजमेर ढंडा ने बताया कि पूजा का इलाज यहां अस्पताल में चल रहा है। पूजा हरियाणा खेल विभाग में कुश्ती कोच के पद पर कार्यरत हैं और उनकी नियुक्ति अभी हिसार के महाबौर स्टेडियम में है।

# आईपीएल-14 जीत की पट्टी पर लौटना चाहेंगे दिल्ली और पंजाब

**मुंबई।** दिल्ली कैपिटल्स और पंजाब किंग्स की टीमों अपने-अपने पिछले मुकाबलों में मिली हार को भुलाकर रविवार को होने वाले आईपीएल के 11वें मैच में जीत की पट्टी पर लौटना चाहेंगे। दिल्ली को पिछले मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अंतिम ओवर के रोमांच के बाद हार का सामना करना पड़ा था जबकि पंजाब को चेन्नई सुपर किंग्स ने पराजित किया था। ऋषभ पंत की कप्तानी वाली दिल्ली को आईपीएल के इस सीजन के अपने पहले मुकाबले में चेन्नई के खिलाफ जीत मिली थी लेकिन राजस्थान ने उसे पिछले मैच में हरा दिया था। दिल्ली ने राजस्थान को 147 रनों का लक्ष्य दिया था और राजस्थान के पांच विकेट 42 रन पर ही गिरा दिए थे। लेकिन अंत में उसे हार का सामना पड़ा था। पंजाब का पिछले मुकाबले में प्रदर्शन निराशाजनक रहा था और चेन्नई ने उसे 20 ओवर में आठ विकेट पर 106 रन पर रोकने के बाद वह विकेट से जीत हासिल की थी। पंजाब ने इस सीजन के पहले मैच में 221 रन बनाए थे लेकिन पिछले मैच में उसकी टीम दीपक चाहर के आगे बेदम नजर आई थी। पंजाब को कै गिंसो रबादा और एनरिक नॉल्स की चुनौती का सामना करना पड़ेगा। पंजाब के लिए सलामी बल्लेबाज मयंक अग्रवाल की फार्म चिंता का विषय है जो दोनों मैचों में असफल रहे हैं।

**इस मुकाबले के लिए दोनों टीमों इस प्रकार हैं:** पंजाब किंग्स : लोकेश राहुल (कप्तान और विकेटकीपर), मयंक अग्रवाल, क्रिस गेल, मनीदीप सिंह, प्रभासिमरन सिंह, निकोलस पूरन (विकेटकीपर), सरफराज खान, दीपक हुडा, मुरुगन अश्विन, रवि बिस्नोई, हरप्रीत बरार, मोहम्मद शमी, अर्शदीप सिंह, ईशान पोरल, दर्शन नालकडे, क्रिस जॉर्डन, डेविड मलान, झाई रिचर्डसन, शाहरुख खान, रिसे मेरेंडिय, मोएसिस हेनरिक्स, जलजल सबसेना, उत्केश सिंह, फेबियन एलेन और सौरभ कुमार।



## संक्षिप्त समाचार

### जोहान अगार F1 में जगह बनाना चाहती है तो लगातार बेहतर करना होगा : डॉ मार्को

नई दिल्ली : भारतीय चालक जोहान दारुवाला के फार्मूला टू (एफ-टू) सत्र की पहली रेस में बेहतर प्रदर्शन से प्रभावित उनके मेंटोर और रेडबुल (रेसिंग टीम) 'ड्राइव डेवलपमेंट प्रोग्राम' के प्रमुख डॉ. हेलमुट मार्को ने कहा कि एफ-वन के सपने को साकार करने के लिए उन्हें लगातार बेहतर प्रदर्शन करना होगा। पिछले साल ओसत प्रदर्शन के बाद जोहान एफ-टू के मौजूद सत्र में बेहरीन में हुए पहले दौर के बाद तालिका में तीसरे स्थान पर हैं। वह स्प्रीट रेस में दूसरे और फिर चौथे तथा फीचर रेस में छठे स्थान पर रहे थे। मुंबई के इस 22 साल के चालक का सपना नरेन कार्तिकेयन और करुण चंडेक के बाद भारत का तीसरा एफ-वन ड्राइवर बनने का है। चार बार के एफ-वन चैम्पियन सबेस्टियन वेटल के करियर में अहम भूमिका निभाने वाले मार्को ने कहा- पिछले साल की तुलना में पहले दौर में उनका प्रदर्शन अच्छा था लेकिन उसे अभी और सुधार करना होगा। उसका लक्ष्य चैम्पियनशिप जीतना होना चाहिए। खुद एफ-वन ड्राइवर रहे मार्को ने इमोला ग्रांप्री से पहले कहा- लक्ष्य खिताब जीतना है लेकिन इससे वह सीधे एफ-वन में नहीं पहुंच जाएगा। यह सिर्फ एक रेस है। इस समय कुछ थोड़ा कठनाई काफ़ी जल्दबाजी होगी। सब कुछ प्रदर्शन पर निर्भर है। इस दौर में और भी कई युवा चालक हैं।

### अब 30 मई को नहीं होगा टाटा मुंबई मैराथन, नई तारीख होगी जारी

मुंबई। टाटा मुंबई मैराथन के 17वें संस्करण का आयोजन पूर्वोक्त कार्यक्रम के अनुसार अब 30 मई को नहीं होगा। आयोजक प्रोकेम इंटरनेशनल ने शनिवार को कहा कि महाराष्ट्र सरकार और संबंधित एथलेटिक निकायों के साथ विचार-विमर्श के बाद नई तिथि की घोषणा की जाएगी। प्रोकेम इंटरनेशनल के संयुक्त प्रबंध निदेशक विवेक सिंह ने कहा कि पूरे देश में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए मुंबई मैराथन 2021 को 30 मई को आयोजित नहीं किया जाएगा। इस बारे में नई तारीख जारी की जाएगी। सिंह ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार और संबंधित एथलेटिक निकायों के साथ विचार-विमर्श के बाद नई तिथि की घोषणा की जाएगी और अब सबकुछ एप रिसे से किया जाएगा। सिंह के मुताबिक रेस में हिस्सा लेने वाले धावकों और इससे जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों की सुरक्षा सर्वोपरि है और इसी को देखते हुए यह फैसला लिया गया है।

# 'जीजाजी छत पर कोई है' के जीजाजी उर्फ शुभाशीष झा ने कहा, "मैं अपनी वास्तविक ज़िंदगी में जीजाजी जैसा दोस्त रखना पसंद करूंगा"



सोनी सब का शो 'जीजाजी छत पर कोई है' अपनी तरोताजा और दिलचस्प कहानी से लगातार दर्शकों का दिल जीत रहा है, ये कहानी उम्रदराज जल्दीराम और जितल के पारिवारिक झगड़े के बारे में है, और पुश्तैनी हवेली के आसपास का रहस्य इसमें तड़का लगाता है। जल्दीराम और जितल के बीच हंसाते वाले झगड़ों और सीपी और जीजा के बीच प्यारी सी मजाक-मस्ती के कारण दर्शक इस शो के शौकीन हैं और इसी के साथ क्रिकेटर हैं। ये चीजें मेरे लिए इस क्रिकेटर को बेहद खास बनाती हैं। चुनौतियों का सामना करने के प्रति जो उसका नजरिया है उसमें एक कमाल की ताजगी है और मैं चाहूंगा कि मेरी असल ज़िंदगी में जीजाजी जैसा एक दोस्त जरूर हो।

शूटिंग के बारे में अपना अनुभव शेयर करते हुए उन्होंने आगे कहा, "जीजाजी छत पर कोई है" की टीम के साथ शूटिंग करने का अनुभव बहुत खुशनुमा है हमारे सेट पर बहुत ही सहज और अच्छा माहौल रहता है। यह हुनरमंद अनुभव की कलाकारों का एक शानदार ग्रुप है और उनके साथ काम करना एक बहुत ही सुखद अनुभव है। हिंबा बहुत ही प्रतिभाशाली और एक बेहतरीन को-स्टार हैं जिनके साथ काम करने में मजा आता है। एक सह-कलाकार के तौर पर वह काफी सहज और समझदार हैं, जो हमारे सोन्स के लिए बहुत कारगर साबित होता है। उन्होंने आगे कहा, "मेरे प्रशंसकों से मुझे जो प्यार और सहयोग मिल रहा है वो बहुत हिम्मत देता है और मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। यह मुझे मेरी सोमाओं से आगे बढ़ने और हर दिन बेहतर काम करने के लिए प्रेरित करता है। मैं अपने प्रशंसकों का सदैव आभारी हूँ और उनसे ये वादा करता हूँ कि इसी प्रकार हम इस शो के माध्यम से उनका मनोरंजन करते रहेंगे। शो के आगामी एपिसोड्स हास्य और रोमांच से भरपूर हैं और मनोरंजन एक पायदान ऊपर जाने वाला है। तो, हमारे साथ बने रहें और इस खूबसूरत सफर का आनंद लें।"

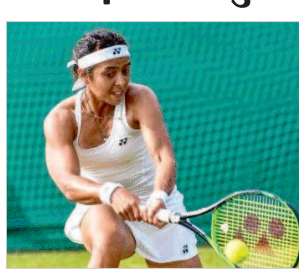
**देखते रहिए 'जीजाजी छत पर कोई है', सोमवार से शुरूकार, रात 10 बजे, सिर्फ सोनी सब पर**

## महिला हॉकी कोर ग्रुप बेंगलुरु के साइड में ट्रेनिंग शुरू करेगा

नयी दिल्ली, भारतीय महिला हॉकी कोर ग्रुप 10 दिन के ब्रेक के बाद रविवार को बेंगलुरु में राष्ट्रीय शिविर में तोक्यो ओलिंपिक खेलों की तैयारियां फिर शुरू करेगा। पचीस सदस्यीय ओलिंपिक कोर ग्रुप ट्रेनिंग शुरू करने से पहले अनिवार्य पृथक्वास से गुजरेगा। जनवरी में टीम ने अर्जेंटीना का दौरा किया था, जहां उसने घरेलू टीम की जूनियर, बी टीम और सीनियर टीम (विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान) के खिलाफ सात मैच खेले थे। यह टीम का 12 महीनों में पहला दौरा था। फरवरी में टीम जर्मनी के दुसेलदोर्फ गयी थी, जहां उसने मेजबानों की सीनियर टीम के खिलाफ चार मैच खेले थे। मुख्य कोच शोर्ड मारिन ने कहा, "इन मैचों का मिलना हमारे लिये काफी अहम था ताकि हम अभी किस स्तर पर हैं, इसका आकलन कर सकें और ओलिंपिक से पहले कुछ विशेष क्षेत्रों में सुधार के लिये क्या जरूरी है, यह पता कर सकें।" उन्होंने कहा, "आगामी शिविर में भी, हम इन्हीं क्षेत्रों पर ध्यान लगायेंगे और साथ ही अपनी फिटनेस को प्राथमिकता में रखेंगे।" भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के कोविड-19 मामलों के बढने के बाद पूरे देश में अपने विभिन्न राष्ट्रीय उकृष्टता केंद्रों में नौ अप्रैल को तीन हफ्ते की गर्मियों की छुट्टियों की घोषणा की थी लेकिन कहा था कि ओलिंपिक के लिये क्वालीफाई करने वाले खिलाड़ी अपने शिविरों में ट्रेनिंग जारी रखेंगे।



## थोड़ा पहले मुकाबले के अनुकूल होने से चीजें अलग होतीं : अंकिता रैना



जुर्माला (लातविया)।

भारतीय महिला टेनिस टीम की टॉप रैंक की एकल खिलाड़ी अंकिता रैना ने यहां जारी बिली

थॉडी को लातविया के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। इस हार के बाद भारतीय टीम अब लातविया के खिलाफ 0-2 से पीछे हो गई है। विश्व रैंकिंग की 174वीं नंबर की खिलाड़ी रैना ने मुकाबले के बाद कहा, 'जैसा कि पहले सेट से ही मुझे समझ में आ गया कि वह (ओस्टोपेंको) क्या कर रही थीं और मुझे अपने खेल में बदलाव करने की आवश्यकता थी। यह अच्छा था कि मैं उनके खेल के अनुकूल हो सकी, लेकिन यह शायद थोड़ा अलग होता, अगर मैं अनुकूल हो जा जाती तो।

2017 की फेंच ओपन चैंपियन ओस्टोपेंको ने रैना को 6-2, 5-7, 7-5 से मात दी। ओस्टोपेंको ने दो घंटे और 24 मिनट में यह मुकाबला जीता। उन्होंने कहा, जब आप अपने देश के लिए खेलती हैं, तो आप प्रत्येक चीज के लिए लड़ते हैं और यह मैच में देखा गया। मुझे लगा कि मैं पहले सेट में थोड़ा बेहतर कर सकती हूँ और मैंने (दूसरा सेट जीतने के लिए) कोशिश किया, लेकिन ओस्टोपेंको पहले भी इस तरह के मैच खेल चुकी हैं और सर्वश्रेष्ठ स्तर पर खेलती हैं। लातविया की नंबर 1

खिलाड़ी सेवास्तोवा ने विश्व रैंकिंग में 691 की नंबर खिलाड़ी थॉडी को 6-4, 6-0 से मात दी। सेवास्तोवा ने एक घंटे और 17 मिनट में यह मुकाबला अपने नाम किया। भारत पहली बार इस टूर्नामेंट में भाग ले रहा है। थॉडी ने कहा, शीर्ष-50 खिलाड़ी के खिलाफ पहली बार किसी खेलने से सीखने का बहुत बड़ा अनुभव है। अब, मुझे अपने बैक्सिंहल्ट पर काम करने की जरूरत है। कुछ साल बाद इस स्तर पर खेलना और एक शीर्ष-50 खिलाड़ी के खिलाफ खेला आसान नहीं है।

## स्टार इंडिया को अगले पांच सीजन के लिए मिले पीकेएल के मीडिया राइट्स मुंबई।

स्टार इंडिया ने प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के अगले पांच सीजन (2021 से 2025) के मीडिया राइट्स हासिल कर लिए हैं। स्टार ने शनिवार को आयोजित ऑनलाइन ऑक्शन के जरिए ये अधिकार प्राप्त किए। मशाल स्पोर्ट्स ने ओपन टेंडर के जरिए राइट्स के लिए इच्छुक कम्पनियों को ऑफर दिया था। इसी के तहत स्टार को औसत वार्षिक मूल्य के आधार पर मीडिया राइट्स मिल गए। यह मूल्य बीते सीजन के राइट्स फीस से दो गुना है। स्टार इंडिया पीकेएल के बीते सात सीजन का मीडिया राइट्स पार्टनर रहा था लेकिन यह पहला मौका था जब लीग के आयोजक मशाल स्पोर्ट्स ने योग्य घरेलू एवं ग्लोबल प्लेअर्स के सामने ओपन टेंडर प्रॉसेस के जरिए अधिकार पाने का प्रस्ताव रखा था। पीकेएल के आठवें सीजन का आयोजन 2020 में होना था लेकिन कोरोना के कारण इसे स्थगित कर दिया गया। इस साल आठवें सीजन के आयोजन को लेकर चर्चा तेज है।



# कुंभ मेले से सूरत आये १३ लोग पाँजिटिव निकले 77 वर्षीय वृद्धा 7 दिन में कोरोना से जंग जीतकर अपने घर लौटी

## सूरत कमिश्नर बंछानिधि पानी ने ट्रावेल करने वाले लोग आये तो सोसाइटी प्रमुखों ने पालिका को जानकारी देने की सूचना दी

सूरत । कोरोना वायरस के केस लगातार बढ़ने से कुंभ मेले के समापन की घोषणा कर दी है। अब कई यात्री कुंभ मेले से वापस आ रहे हैं। अब गुजरात में भी यह यात्री आ रहे हैं। कुंभ से सूरत आये १३ लोग अभी तक पाँजिटिव निकले हैं। सूरत में ३०० से ज्यादा लोगों का टेस्ट किया गया था। अब कुंभ से आये लोगों के आरटीपीसीआर नेगेटिव नहीं आये तब तक सभी को क्वारंटाइन रहने का आदेश दिया गया है। हालांकि कई लोग अभी भी कुंभ से आने की जानकारी छिपा रहे हैं। अब लोग आये तो सोसाइटी प्रमुखों ने पालिका को जानकारी देने की सूचना दी जाएगी। क्योंकि अखाड़ा के कई साधुसंत पाँजिटिव आये हैं। जिसके बाद कई यात्री अपने वतन तरफ जा रहे हैं। ऐसे में गुजरात में आ रहे यात्री भी कोरोनाग्रस्त हो रहे हैं। जिसमें सूरत में १३ लोग पाँजिटिव निकले हैं। ऐसे में सूरत कमिश्नर बंछानिधि पानी ने ट्रावेल करने वाले



सूरत की परिस्थिति ज्यादा गंभीर है। सूरत में एक ही महीने में २८६ बच्चे संक्रमित हुए हैं। जिसमें से ३ बच्चों की मौत हुई है। १० वर्ष तक की उम्र के बच्चों में संक्रमण ज्यादा देखने को मिल रहा है। जिसमें अठवा जोन में ७२ केस देखने को मिले हैं।

सूरत । कोरोना की दूसरी लहर में संक्रमण दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। ऐसे में अस्पतालों में डॉक्टर और मेडिकल स्टाफ दिन रात एक कर मरीजों को स्वस्थ करने में सफलता हासिल कर रहे हैं। सूरत के सिविल अस्पताल में। दिनों के उपचार के बाद कोरोना संक्रमित 11 वर्षीय वृद्धा स्वस्थ होकर अपने घर लौट गईं। वृद्ध होने के बावजूद कोरोना ने उनके आगे चुटने देकर दिए। अस्पताल से डिस्चार्ज होने पर वृद्धा ने अस्पताल समेत डॉक्टरों के प्रति आभार जताया और कहा कि उनकी वजह से आज मैं स्वस्थ होकर घर लौट रही हूँ। सूरत के चुड़दौड़ क्षेत्र में रहने वाली 11 वर्षीय वृद्धा हंसाबेन ने कोरोना वैक्सिन के दोनों डोज लिए थे। इसके बावजूद वह कोरोना संक्रमित हो गईं। बुखार आने पर हंसाबेन का 10 अप्रैल को टेस्ट करवाया गया था। कोरोना पाँजिटिव रिपोर्ट आने के बाद उन्हें तुरंत सूरत के नए सिविल अस्पताल के कोविड वार्ड में दाखिल किया गया। ऑक्सीजन लेवल कम होने के कारण हंसाबेन को ऑक्सीजन पर रखा गया था। स्वस्थ होने के बाद हंसाबेन ने कहा कि जब उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया तब वह काफी डरी हुई थीं। लेकिन सिविल अस्पताल के डॉक्टरों ने मेरा बेहतर उपचार कर मुझे कोरोना से मुक्त कराया। सिविल अस्पताल के उमदा उपचार और बेटे समान डॉक्टरों ने मुझे सात दिनों में स्वस्थ कर दिया। सिविल प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए हंसाबेन ने कहा कि मुझे जब अस्पताल में लाया गया तब मेरे फेफड़ों में 35 प्रतिशत कोरोना का संक्रमण था और ऑक्सीजन लेवल घट गया था। लेकिन सिविल अस्पताल में ईश्वर के दूत स्वरूप डॉक्टर और मेडिकल स्टाफ के कारण आज सात दिनों में स्वस्थ होने के बाद अपने घर लौट रही हूँ। सिविल अस्पताल के निष्ठावान स्वास्थ्य सेनानी डॉ. अश्विन वसावा, डॉ. प्रियंका शाह, डॉ. दीपाली पटेल, डॉ. अमीरा पटेल समेत नर्सिंग और पैरामेडिकल स्टाफ के सफल उपचार से कई मरीजों को नवजीवन मिल रहा है।

## १२०० में रेमडेसिवीर मिलेगी ऐसी ओएलएक्स की पोस्ट मिली

सूरत । गुजरात में फिलहाल कोरोना वायरस का आतंक देखने को मिल रहा है तब रेमडेसिवीर इंजेक्शन के लिए लोग अभी भी प्रयास कर रहे हैं। कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों का परिवार के लिए चक्कर लगा रहा है। अब ऐसी पोस्ट की वजह से लोगों को यह अपेक्षा होती है लेकिन ने कहा है कि, अब यह इंजेक्शनों का स्टोक बढ़ा दिया गया है लेकिन वास्तविक स्थिति तो कुछ दूसरी है। यह हाहाकार के बीच कितने आलोचना करने वाले हैं जो लोग ऐसी खराब परिस्थिति में मजा ले रहे हैं। सूरत के डिंडोली के अंबिका पार्क तथा अखबारनगर में १२०० रुपये में रेमडेसिवीर इंजेक्शन मिलेगी ऐसी ओएलएक्स की पोस्ट मिली। हालांकि, लोग यह पोस्ट करने वाले व्यक्ति का संपर्क नहीं कर सके। वह व्यक्ति को इंज



क्शनों की जरूरत है ऐसा मैसेज भी दिया लेकिन सामने से कोई जवाब नहीं आया था। जो मरीज जीवन-मौत की जंग लड़ रहा हो इसका परिवार तो यह इंजेक्शन के लिए चक्कर लगा रहा है। अब ऐसी पोस्ट की वजह से लोगों को यह अपेक्षा होती है लेकिन ने कहा है कि, अब यह इंजेक्शनों का स्टोक बढ़ा दिया गया है लेकिन वास्तविक स्थिति तो कुछ दूसरी है। यह हाहाकार के बीच कितने आलोचना करने वाले हैं जो लोग ऐसी खराब परिस्थिति में मजा ले रहे हैं। सूरत के डिंडोली के अंबिका पार्क तथा अखबारनगर में १२०० रुपये में रेमडेसिवीर इंजेक्शन मिलेगी ऐसी ओएलएक्स की पोस्ट मिली। हालांकि, लोग यह पोस्ट करने वाले व्यक्ति का संपर्क नहीं कर सके। वह व्यक्ति को इंज

## नाइट कर्फ्यू में एंबुलेंस की सायरन बजाने पर प्रतिबंध मरीजों को नहीं मिल रहा बेड

### नाइट कर्फ्यू में एंबुलेंस के सायरन से लोगों में डर का माहौल खड़ा होता है, ट्रैफिक में सायरन बजाने पर मंजूरी

अहमदाबाद । डर का माहौल खड़ा होता है राज्य में कोरोना वायरस का तांडव चल रहा है। जिसकी वजह से लोगों की रातों की नींद हराम हो गई है। यह राज्य के मुख्यमंत्री विजय रुपाणी ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। कोरोना की इस परिस्थिति के बीच लोगों का मानसिक स्वास्थ्य नहीं बिगड़े इसके लिए अब नाइट कर्फ्यू के दौरान १०८ एंबुलेंस की सायरन बजाने पर प्रतिबंध लगाया गया है। सिर्फ १०८ ही नहीं लेकिन राज्य सरकार ने निजी अस्पतालों की एंबुलेंस के लिए सायरन बजाने पर



प्रतिबंध लगाया गया है। एंबुलेंस के सायरन से लोगों में डर का माहौल खड़ा होता है और यह डर का माहौल खड़ा नहीं हो इसके लिए नाइट के दौरान एंबुलेंस की सायरन बजाने पर प्रतिबंध लगाया गया है। उल्लेखनीय है कि ट्रैफिक होने की वजह से

## गुजरात के प्रत्येक ऑक्सीजन प्लांट सरकार की निगरानी में

अहमदाबाद । गुजरात सरकार ने राज्य में ऑक्सीजन की जबरदस्त किल्लत को देखते हुए सभी ऑक्सीजन प्लांट की निगरानी का अधिकारियों को सौंप दी है। साथ ही राज्य में स्थिति सामान्य होने तक ऑक्सीजन का पूर्ण उपयोग मेडिकल क्षेत्र में करने और अन्य किसी राज्य को सप्लाई नहीं करने का भी आदेश दिया है। कोरोना के नए स्ट्रेन से संक्रमित मरीज को सांस लेने में काफी दिक्कत होती है और ज्यादातर मरीज सांस लेने में तकलीफ की शिकायत के साथ अस्पताल में दाखिल हो रहे हैं। समस्या यह है कि सरकारी हो या निजी अस्पताल में सभी जगह ऑक्सीजन की किल्लत है। ऑक्सीजन की किल्लत से निपटने

## कोरोना के खिलाफ जंग में राज्य सरकार न हारेगी-न थकेगी: मुख्यमंत्री

अहमदाबाद । मुख्यमंत्री विजय रुपाणी ने शनिवार को कच्छ जिले में कोरोना की दूसरी लहर के संक्रमण को काबू करने के लिए जिले के अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक की। उन्होंने कहा कि पूरे गुजरात में कोरोना की दूसरी लहर बेहद व्यापक बनी है और चिंता पैदा करने वाली है, तब राज्य सरकार भी दृढ़ निश्चय के साथ कोरोना के खिलाफ जंग में न हारेगी, न थकेगी और अधिकतम व्यवस्था करेगी। भुज कलक्टर कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में मुख्यमंत्री विजय रुपाणी और उप मुख्यमंत्री नितिनभाई पटेल की विशेष उपस्थिति में कच्छ जिले में कोरोना के हालात पर व्यापक समीक्षा की गई। समीक्षा बैठक में जिला कलक्टर प्रवीण डीके ने जिले में कोरोना की वर्तमान परिस्थिति तथा प्रशासन एवं स्वास्थ्य तंत्र की व्यवस्थाओं की विस्तृत जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिले में कोरोना की स्थिति को ध्यान में रखते हुए



के साथ बातचीत में कहा कि कच्छ में 'रेमडेसिवीर' की कमी को दूर करने के लिए 80 वेंटिलेटर आर्वाइट करने का भी निर्णय किया है। उन्होंने कच्छ में कच्छ की जनता से अपील करते हुए कहा कि अब तक महामारी जैसे शब्द सुनने या पढ़ने में आते थे, उसकी अब अनुभूति भी हो रही है। ऐसे में, कच्छीजनों से उन्होंने अनुरोध किया कि वे अनिवार्य रूप से मास्क पहने, बिना काम के घर से बाहर न निकलें और वैक्सिन अवश्य लगवाएं। उन्होंने जनता को आश्वासन दिया कि राज्य सरकार उनके साथ है और लगातार चिंता कर रही

## गुजरात के हीरा उद्योग पर महामारी बेअसर

सूरत । कोरोना वायरस महामारी से सभ उद्योग प्रभावित हुए हैं। कोरोना संक्रमण के मामले और मौतों की संख्या में जारी वृद्धि के चलते खौफनाक माहौल बना हुआ है। कोविड-19 के मामले बढ़ने और लॉकडाउन लगने की आशंका में प्रवासी मजदूर बड़ी संख्या में अपने गांवों की तरफ जाने लगे हैं। लेकिन गुजरात के सूरत शहर के हीरा उद्योग का दावा है कि मौजूदा स्थिति का डायमंड इंडस्ट्री पर फिलहाल कोई असर नहीं हुआ है। सूरत डायमंड एसोसियेशन के मुताबिक सूरत शहर में 3,000 के करीब छोटे और बड़े हीरा कारोबारियों द्वारा पांच लाख कर्मचारियों को काम पर रखा गया है। यहां जयादातर प्रवासी मजदूर सौराष्ट्र और उत्तरी गुजरात के हैं जबकि केवल 10 फीसदी

## संचालक ने विद्यार्थी के फोन से शिक्षिका के पति को मैसेज किया

अहमदाबाद । अहमदाबाद शहर में रहते और अस्पताल में डॉक्टर के तहत इंटरशिप करने वाले युवक ने साइबर क्राइम से शिकायत दर्ज कराई थी। एक शख्स ने मैडम के विद्यार्थी का भाई बोल रहा हूँ कहकर युवक को खराब मैसेज भेजा और बाद में अश्लील फोटो भी भेजा। यह मामले में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। टयूशन क्लास संचालक ३५ वर्षीय कल्पेशकुमार वासुदेव जोषी ने पहले टयूशन क्लासेस लेती शिक्षिका ने टयूशन क्लास लेने जाने का बंद कर देने पर इसके पति को गंदा मैसेज भेजा। शिक्षिका ने टयूशन क्लास में जाने का बंद करने पर संचालक को आर्थिक नुकसान हुआ है। जिसकी वजह से निजी दुश्मनी रखकर गंदा मैसेज और फोटो टयूशन क्लास में आते विद्यार्थियों के मोबाइल से शिक्षिका के पति को भेजकर परेशान करता था। अहमदाबाद साइबर क्राइम पुलिस ने गंदा मैसेज करने वाले संचालक को उन्हा से गिरफ्तार किया गया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि आरोपी कल्पेश ने इसे वहां टयूशन क्लास करने आते विद्यार्थी के फोन का उपयोग करके शिकायतकर्ता को इसकी पत्नी मामले में गंदा मैसेज और फोटो भेजा था। इस अपराध में इस्तेमाल हुआ मोबाइल फोन जांच के लिए जब्त किया गया है। आरोपी ने बीकॉम तक पढ़ाई किया है और पढ़ाई करने के बाद अपने गांव मकुपुर में टयूशन क्लासेस चलाता है। इसके साथ आरोपी सिद्धपुर में रेडीमेड



गारमेट का व्यापार धंधा करते हैं। शहर के शाहीबाग डफनाला चार रास्ते के पास सरकारी मकान में रहते २३ वर्षीय युवक बड़े भाई तथा मां के साथ रहती है। शहर बाहर एक अस्पताल में वह डॉक्टर के तहत इंटरशिप करते हैं। उनका भाई शहर की एक सरकारी अस्पताल में नर्सिंग स्टाफ में ड्यूटी करते हैं।

## 9 वीं कक्षा पास स्वास्थ्य राज्य मंत्री को आमंत्रण पत्रिका में डॉक्टर बना दिया

सूरत । चौर्यासी की विधायक ने बुडिया गांव की रामजीवाडी में 80 बेंड का कोविड केयर सेंटर तैयार करवाया है। जिसके उदघाटन के लिए बांटी गई पत्रिका में स्वास्थ्य राज्यमंत्री कुमार कानाणी का भी नाम शामिल है। कुमार कानाणी 9वीं कक्षा पास हैं और उनके नाम के आगे डॉ. लगाने से सोशल मीडिया पर झंखना पटेल ट्रेल हो गई। ने उसमें सुधार किया। राज्यभर पर शेर कर रहे हैं। गलती का अहसास होने पर झंखना पटेल ने कुमार कानाणी के नाम के आगे से डॉ. हटा दिया। झंखना पटेल ने कहा कि शेर की गई आमंत्रण पत्रिका में नुटी का पता चलते ही उसमें सुधार का तुरंत आदेश दिया है।